प्रेस विज्ञप्ति *दिनॉंक 25 - 06- 2010*

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 333 वें गुरू वंदना के अवसर पर

" टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम संपन्न "

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई में प्रत्येक सोमवार शाम 6.30 बजे गुरू वंदना के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम जारी है । इस अवसर पर समाज के अनुभवी सम्मानीय जन अपने अपने क्षेत्र के अनुभव की संक्षिप्त जानकारियॉं क्रमबद्ध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं ।

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई में 21 जून 2010 को 333 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री छेदी लाल जोशी जी. बी एस पी कर्मी एवं वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता ने " बच्चों के परिवरिश एवं शिक्षा में मॉं-बाप की भूमिका अहम ।" विषय पर अपने अनुभव के टिप्स प्रदान किये । उन्होंने बताया कि बच्चों के परिवरिश एवं शिक्षा में मॉं-बाप की अहम भूमिका के लिये वर्तमान परिवेश में बच्चों एवं मॉं बाप की वास्तविक स्थिति को जानना आवश्यक हो जाता है । जहॉं तक बच्चों का सवाल है । सर्वेक्षण से पता चलता है कि वर्तमान में अनाथ बच्चों की संख्या को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता । आंकड़ा बताता है कि सन् 2001 में एसिया में 933 मिलियन बच्चों में से 65 मिलियन बच्चे (6.5 प्रतिसत), सब सहारन अफरिका में 288 मिलियन बच्चों में से 34 मिलियन बच्चे (12.00 प्रतिसत), लेटिन अमेरिका केरिबियन में 162 मिलियन बच्चों में से 8 मिलियन बच्चे (5.00 प्रतिसत)पाये गये थे । भारत वर्ष में सन् 2005 में 2 करोड़ 57 लाख बच्चे अनाथ पाये गये थे । इतनी तादाद में अनाथ बच्चों की परिवरिस एवं शिक्षा बिना मॉं बाप के संबंधित सरकार के साथ ही विभिन्न सामाजिक संस्थायों के लिये एक चुनौति भरा कार्य है । हमारे भारत देश में लगभग 75 प्रतिसत जनता गॉंवों में निवास करती है गॉंवों में शिक्षा की स्थिति काफी दयनीय नजर आती है । आर्थिक व सामाजिक गैर बराबरी भी एक चिंता का विषय है । ये सब परिस्थितियॉं मॉं बाप को भी विभिन्न श्रेणियों में बांटने के प्रमुख कारण हैं। इस मॉं बाप की श्रेणी में निर्धन, मध्यम, धनी, साक्षर, निर्क्षर आदि प्रमुख हैं । इन सबमें निर्धन व मध्यम आर्थिक स्थिति वाले मां बाप की बाहुलता नजर आती है । साथ ही सरकारी, अर्ध सरकारी अथवा प्राइवेट नौकरी वाले मॉं बाप कमाई अथवा तनख्वाह के आधार पर अलग-अलग सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश में जीवन- यापन करते नजर आते हैं ।अतएव आर्थिक व सामाजिक स्थिति के साथ ही साक्षरता एवं अन्य विभिन्न पहलुयें बच्चों के परिवरिस एवं शिक्षा को प्रभावित करते हैं । मॉं बाप सामाजिकता, आर्थिकता, साक्षरता, ग्रामीणपन, शहरीपन, नौकरीशुदा, बेरोजगार आदि के भंवर जाल में फंसे नजर आते हैं । मॉं बाप की ये सब परिस्थितियॉं बच्चों के परिवरिस एवं शिक्षा को भी प्रभावित करती हैं । ऐसी विषम परिस्थिति में संतुलन की स्थिति प्राप्त करने की तकनीक की जानकारी होना जरूरी है । संतुलन की स्थिति प्राप्त कर के ही बच्चों की परिवरिस व शिक्षा पर पर उचित ध्यान दिया जा सकता है । संतुलन की स्थिति प्राप्त करने के लिये स्वयं के आदत व्यवहार पर नियंत्रण . जरूरत व चाहत की विश्लेषण आवश्यक हो जाता है । बच्चे के मॉं के कोंख में आगमन से ही मॉं

बाप की अहम भूमिका प्रारंभ हो जाता है । बच्चों के पैदाइस के साथ ही जनसंख्या में बृद्धि का भी सवाल रेखांकित हो जाता है । बच्चों के बढ़ती उम्र के अनुसार मॉं बाप की अनुपातिक भूमिका में परिवर्तन होते रहता है। यह भी जानना जरूरी है कि किन किन परिस्थितियों में मॉं अथवा बाप की भूमिका कितना व कहॉं तक हो। मोटे तौर पर देखा जाता है कि मॉं की भूमिका सर्वोपरी होता है। बच्चे को नौ माह गर्भ में रखकर परिवरिस करना मॉं का ही चुनौति भरा भूमिका हो सकता है। बच्चे को दुग्धपान मॉं व बच्चे के बीच संबंध को प्रागाढ़ता प्रदान करता है। बच्चे के स्कूल व कालेज जाने पर बाप की भूमिका कुछ ज्यादा बढ़ने लगता है। इन समस्त परिस्थितियों में आर्थिक सामाजिक परिस्थितियों के अलावा पारिवारिक व सामाजिक संस्कार एवं संस्कृति की अहम भूमिका होती है। बच्चों के लिये मॉं बाप प्रथम गुरू होते हैं। बच्चों को सिखाने के पहले मॉं बाप को उन बातों का पालन खुद ही करना होगा। अन्यथा बच्चों को सिखाने का असर प्रभाव शाली नहीं हो सकता। मॉं बाप को बच्चों की जरूरत व चाहत को समझ कर ही लक्ष्य को निर्धारित करना चाहिये। लक्ष्य निर्धारण के लिये उपलब्ध ताकत अथवा साधन, कमजोरियों, अवसर व आने वाले चुनौतियों का विशेष ध्यान देना चाहिये । बच्चों के ऊपर मनोविज्ञानिक असर का विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये । बच्चों के परिवरिस व शिक्षा में साधन की प्रचुरता व अभाव दोनों ही हानिकारक हो सकता है । संतुलित मात्रा में ही साधन उपलब्ध होने से ही बच्चों की विकाश तेजी से संतुलित रूप से होने की गुंजाइस ज्यादा होती है । बच्चों के परिवरिस व शिक्षा के साथ ही उनकी आदत व्यवहार में संतुलन की स्थिति पैदा करना ही मॉं बाप की सार्थक भूमिका को सिद्ध करती है । इस अवसर पर श्री छेदी लाल जोशी जी का स्वागत श्री संत ज्ञानेश्वर गायकवाड जी ने चंदन का टीका लगा कर किया गया । गुरू प्रसाद श्री पोषण कुमार देशलहरे जी के परिवार की ओर से था ।

इसी कड़ी में अगला "टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई में **334** वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनॉंक **28** जून **2010** शाम **6.30** बजे संपन्न होगा . जिसमें आप सब आमंत्रित हैं ।

(एफ आर जनार्दन)

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिंदी /अंग्रेजी दैनिक
....

संयोजक
गुरू वंदना परिवार भिलाई दुर्ग

प्रेस विज्ञप्ति   *दिनॉक 16 - 06- 2010*

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 332 वें गुरू वंदना के अवसर पर " टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम संपन्न "

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई में प्रत्येक सोमवार शाम 6.30 बजे गुरू वंदना के अवसर पर एक विशेष कार्य क्रम टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्य क्रम जारी है । इस अवसर पर समाज के अनुभवी सम्मानीय जन अपने अपने क्षेत्र के अनुभव की संक्षिप्त जानकारियॉं क्रमबद्ध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं ।

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई में 14 जून 2010 को 332 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री व्यास नारायण कुर्रे जी वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता ने "जनगणना में जाति का मुद्दा - अहम क्यों और कैसे ? " विषय पर अपने अनुभव के टिप्स प्रदान किये । उन्होंने बताया कि हमारा प्राचीन भारत देश नाग ,द्रवीण सभ्यता के नाम से विख्यात रहा है । कालांतर में हजारों साल पहले विदेशियों के आगमन के बाद जातिवाद ने पैर पसारना शुरू किया, जिसकी जड़ें अभी भी काफी गहरी नजर आती हैं। ये बात जरूर है कि बीच बीच में मानवतावादी महापुरूषों के द्वारा जाति विहिन समाज की रचना की पहल जरूर की गई है, जिसकी झलक आज भी मिलती है। मनुष्य के जनम से लेकर मरण तक हमारे देश में जाति का विशेष महत्व है । पिछले कुछ वर्षो से जाति संबंधी ब्यापक चर्चायें प्रारंभ हुयी हैं । वर्तमान में जनगणना की प्रक्रिया शुरू होने से जाति की चर्चायें शासन प्रशासन, विभिन्न संस्थायें के साथ ही साथ पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से आम चर्चा बनी हुयी है। इससे संबंधित विभिन्न प्रकार की सर्वेक्षण अपने अपने सुविधानुसार एवं हिसाब से जारी भी हो चुका है। ऐसे मौके पर जाति के मुद्दे का महत्व और भी बढ़ जाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जीवन से मरण तक जीवन के हर मोड़ पर मनुष्य संस्कार व संस्कृति से बंधा हुआ होता है। संस्कार व संस्कृति, धर्म अथवा जाति आधारित होता है । वैसे तो हमारे देश में अनेक धर्म प्रचलित है । धर्म का शाब्दिक अर्थ धारण करना होता है। प्रत्येक धर्म का कोई न कोई प्रणेता जरूर होता है। प्रणेता ही अपने विचारधारा को आम जनों तक पहुॅंचाने का प्रयास करते हैं । कालांतर में इस विचारधारा में लोग समाहित होते जाते हैं, जिससे विचारधारा की लहर बढ़ते जाती है जो विभिन्न रूपों में प्रदर्शित होती है । विचारधारा को फैलने, फैलाने में उनके पास उपलब्ध साधन का बड़ा ही बहुत ही बड़ी भूमिका होती है । विचारधारा, डंडा से भी फैलती है और प्यार से भी फैलती है । ये अलग बात है कि डंडा से फैली विचारधारा स्थायी नहीं होती, जबकि प्यार सै फैली विचारधारा स्थायी होती है । जागरूकता के आधार पर विचारधारा के फैलाव में फेर बदल होते रहता है । जागरूकता के लिये शिक्षा एक सशक्त माध्यम है । अतएव शिक्षा के प्रचार प्रसार के साथ ही विचारधाराओं के मान्यताओं में फेर बदल होते रहा है। जहॉं तक हमारे देश भारत वर्ष का सवाल है । सदियों से अशिक्षा का मार झेलने के बाद सन् 1825 में ही शिक्षा की शुरूवात मानी जा सकती है, क्यों कि यहीं से ही सर्व शिक्षा अभियान की शुरूआत हुयी थी । यही कारण है कि 19वीं सदी में जागरूकता ब्यापक पैमाने पर विभिन्न रूपों में नजर आती है। यही कारण है कि सन् 1881 की जनगणना में इसका स्पष्ट झलक मिलता है । विचारधाराओं का वर्गीकरण ही विभिन्न धर्मो को जन्म

देता है । मानवता आधारित धर्म व जाति आधारित धर्म दोनों को ही समझना जरूरी है । जाति के उन्मूलन से जाति आधारित धर्म को खतरा होना स्वाभाविक है । अतः जाति आधारित धर्म के समर्थक संस्थायें या व्यक्ति कभी भी जाति को खत्म करना नहीं चाहेंगे। हमारे देश में एक नहीं बल्कि हजारों जातियॉं बनायी गई हैं । इन जातियों की खासियत है कि ये सीढ़ी नुमा व्यवस्था में हैं । जैसे कि सीढ़ी में मिड लैण्डिंग का होना जरूरी है, उसी तरह जातियों की सीढ़ी में भी मिड लैण्डिंग नजर आती है । इसी मिड लैण्डिंग से ही ऊपर की ओर मान सम्मान बढ़ती है, तो नीचे की ओर अपमान की मात्रा बढ़ती जाती है । यही कारण है कि जिनको जाति के नाम से मान सम्मान मिलता है वे कभी भी जाति व्यवस्था को नष्ट नहीं करना चाहेंगे । ठीक इसके विपरीत जिनकों जाति के नाम से अपमानित होना पड़ता है . वे जितना जल्दी हो सके जाति के बंधन से तत्काल मुक्त होना चाहेंगे । देश आजादी के बाद भारतीय संविधान के लागू होने से जाति से अपमानित होने वालों को उनके अपमानित होने के मात्रा के आधार पर कुछ विशेष सुविधा होने से कुछ राहत की सांस जरूर मिली है । अगर जनगणना में जाति का कालम होता है. तो जाति के नाम से मान सम्मान पाने वालों तथा जाति से अपमानित होने वालों की संख्या स्पष्ट होगी । चूंकि भारतीय संविधान अनुपातिक प्रतिनिधित्व को प्रोत्साहित करता है, ऐसे में भागीदारी पर जागरूकता होना स्वाभाविक है । अनुपातिक भागीदारी पर विश्वास नहीं रखने वालों व अनुपातिक भागीदारी के समर्थकों के बीच एक लाइन खींचना भी स्वाभाविक ही है । इस देश के सीढ़ी नुमा जाति व्यवस्था के कारण जाति के प्रति मोंह पैदा हो गया है . क्यों कि हर कोई की निगाह ऊपर की तरफ नहीं होकर नीचे की तरफ ज्यादा नजर आती है. जो उनको आत्म संतुष्टि प्रदान करती है । इस दिशा में कुछ चिंतकों ने चिंतन मनन कर जाति को वर्ग में बदलने की कोशिष किये हैं. जिससे कुछ राहत नजर आती है । आशा है कि इन वर्गो के बीच आर्थिक सामाजिक गैर बराबरी निकट भविष्य में दूर जरूर होगी. जिससे ही मानवतावादी. जाति विहिन समाज की रचना संभव हो पायेगा । उन्होंने संविधान के प्रावधानों के साथ ही सरकार द्वारा अन्य आयोजित आयोगों. काका कालेलकर आयोग . मंडल आयोग आदि के बारे में भी जानकारियॉं प्रदान किये । इस अवसर पर श्री व्यास नारायण कुर्रे जी का स्वागत डॉ लखन लाल मारकण्डे जी ने चंदन का टीका लगा कर किया गया । गुरू प्रसाद श्री मती तीरथ डहरिया जी के परिवार की ओर से था ।

इसी कड़ी में अगला "टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई में **333** वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनॉंक **21** जून **2010** शाम 6.**30** बजे संपन्न होगा . जिसमें आप सब आमंत्रित हैं ।

(एफ आर जनार्दन)

ब्यूरो चिफ	संयोजक
लोक प्रिय हिंदी /अंग्रेजी दैनिक	गुरू वंदना परिवार. भिलाई दुर्ग

....

प्रेस विज्ञप्ति ***दिनॉंक 03 - 06- 2010***

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 330 गुरू वंदना के अवसर पर " टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम संपन्न "

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई में प्रत्येक सोमवार शाम 6.30 बजे गुरू वंदना के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम जारी है । इस अवसर पर समाज के अनुभवी सम्मानीय जन अपने अपने क्षेत्र के अनुभव की संक्षिप्त जानकारियॉं क्रमबद्ध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं ।

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई में 31 मई 2010 को 330 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री गोवर्धन लाल टंडन जी वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता ने " बौद्धिक क्रान्ति की अहमियत - कल आज और कल ? " विषय पर अपने अनुभव के टिप्स प्रदान किये । उन्होंने बताया कि प्रकृति की सृष्टि में कभी भी सत प्रतिसत डुपलीकेट पैदा नहीं होता, चाहे वह सजीव प्राणी हो अथवा निर्जीव पदार्थ हो। कुछ न कुछ अंतर जरूर होता है, जो आम तौर पर पता नहीं चलता बल्कि बारीकी से अध्ययन करने पर पता चलता है। मानव के मस्तिस्क में हमेशा ही अपने आप को प्रत्येक क्षेत्र में सुरक्षित रखने की प्रवृति होती है। खुद की सुरक्षा के साथ ही दूसरों को भी सुरक्षा दिलाने की भावना मानव अथवा विश्व कल्याण की ओर अग्रेसित होता है। लेकिन इसके विपरित सिर्फ अपने ही अथवा अपने खास समूह तक की सुरक्षा रहने की भावना दूसरों को अथवा दूसरे समूहों को असुरक्षा में डालने की बात हो सकती है । इस जगत में दोनों ही प्रकार के लोग नजर आते हैं। बराबरी अथवा गैर बराबरी इसी भावना से पनपती है । गैर बराबरी का वातावरण अल्प समय के लिये तो चल सकता है, लेकिन दीर्घ कालीन तक गैर बराबरी का वातावरण क्रान्ति को जन्म देता है । जिंदगी के विभिन्न क्षेत्रों जैसे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि में समय समय पर देश, काल व परिस्थिति के अनुसार गैर बराबरी के खिलाफ क्रान्ति होते आये हैं, हो रहा है और आगे भी होता रहेगा । वही क्रान्ति ज्यादा कामयाब होती है जिसमें गैर बराबरी की जानकारी अथवा लाचारी व गुलामी का कारण स्पष्ट हो पाता है । क्रान्ति ही गैर बराबरी की लहर को लहर को रोकने का प्रयास करता है । इसमें क्रान्ति के प्रणेता व संचालकों का बहुत ही ज्यादा भूमिका होती है । क्रान्ति का स्वरूप राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि हो सकता है । किसी भी क्षेत्र में क्रान्ति होने से दूसरे सभी क्षेत्रों को भी प्रभावित करता है । लेकिन इन सबमें सबसे ज्यादा प्रभाव सांस्कृतिक क्रान्ति का होता है। सांस्कृतिक क्रान्ति होने से स्वतः ही दूसरे क्षेत्रों में क्रान्ति पैदा हो जाती है । विश्व का इतिहास अनेकों क्रान्ति से भरा पड़ा है । जहॉं तक भारत वर्ष का सवाल है। यहॉं सामाजिक आर्थिक क्रान्ति का सबसे ज्यादा जरूरत थी, है और रहेगी। किसी भी क्रान्ति का नेतृत्व करने के लिये बौद्धिक ज्ञान अथवा बौद्धिक क्रान्ति का होना निहायत जरूरी है । इसके लिये मनुष्य अपने इन्द्रियों ऑंख, कान, नाक, जीभ, त्वचा आदि का सकारात्मक उपयोग करते हुये चलायमान " मन " को संतुलित कर मानव कल्याण अथवा प्रेम व

भाईचारे की धारा को तेज कर पाता है । बहुजन हिताय व बहु सुखाय से ही संतुलन की स्थिति बन पायेगी । इसी कड़ी में छत्तीसगढ़ की धरती में गुरू घासीदास द्वारा सन् **1820** से **1830** तक की बौद्धिक क्रान्ति (INTELECTUAL WAR) का असर व्यापक रूप से देखने को मिलता है । सन् **1825** में सर्व शिक्षा की शुरूवात व सन् **1828- 29** में गुरू बालकदास जी को राजा की पदवी अंग्रेजों द्वारा नवाजा जाना गुरू घासीदास द्वारा प्रतिपादित बौद्धिक क्रान्ति का ही असर है । समतावादी सतनाम सांस्कृतिक क्रान्ति की लहर तब से अब तक चलती ही आ रही है, जो आगे भी चलती रहेगी । वर्तमान परिवेश में बौद्धिक क्रान्ति को और भी तेज करने की सख्त जरूरत है . जिसे शिक्षित व जानकार लोग बड़ी आसानी से केन्द्र बिन्दुओं का निर्माण कर अग्रेसित कर सकते हैं। जनता की जरूरत व चाहत के अनुरूप बौद्धिक क्रान्ति के एक नहीं बल्कि अनेक स्वरूप हो सकते हैं, जिसके लिये शोध की भी आवश्यकता है । पिछले कुछ वर्षो से इस दिशा में विशेष पहल हुयी है, जिससे समाज में नई चेतना के साथ आशा की किरण नजर आने लगी हे । इस अवसर पर श्री गोवर्धन लाल टंडन जी का स्वागत चंदन का टीका लगा कर किया गया । गुरू प्रसाद श्री टी दास जी के परिवार की ओर से था ।

इसी कड़ी में अगला "टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई में **331** वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनॉक **7** जून **2010** शाम **6. 30** बजे संपन्न होगा, जिसमें आप सब आमंत्रित हैं ।

(एफ आर जनार्दन)

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिंदी /अंग्रेजी दैनिक
....

संयोजक
गुरू वंदना परिवार. भिलाई दुर्ग

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉक **13 - 01 - 2010**

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई "में **310** वें गुरू वंदना के अवसर पर " टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " संपन्न

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे गुरू वंदना के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " जारी है । इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपने अपने कार्य क्षेत्र का संक्षिप्त जानकारियां क्रम बद्ध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं।

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में दिनॉक 11 जनवरी (दिन सोमवार) 2010 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 310 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्रीमती रत्ना देशलहरे जी वरिष्ठ सामाजिक सेविका " वर्तमान परिवेश में अंर्तजातीय विवाह के प्रभाव को समझना अति आवश्यक — क्यों और कैसे ? " विषय पर अपना अनुभव का टिप्स प्रदान की। उन्होंने बताया कि अंर्तजातीय विवाह को समझने के पहले भारतीय जाति व्यवस्था को समझना जरूरी है । इतिहास गवाह है कि भारतीय परिपेक्ष में वर्ण व्यवस्था ही जाति व्यवस्था की जननी है । इससे कोई भी इंकार नहीं कर सकता । शुरू से ही वर्ण / जाति व्यवस्था के समर्थन व विरोध में विभिन्न स्तरों पर स्वर मुखरित होते रहे हैं । अधिकांश मानवतावादी महापुरूषों ने जाति विहिन मानव समाज की वकालत किये हैं . जिसका प्रभाव आज भी परिलक्षित होते नजर आते हैं । इतना तो तय है कि किसी भी व्यवस्था का कुछ लोगों को लाभ तो कुछ लोगों को उसका नुकसान उठाना ही होता है । इसी प्रकार वर्ण / जाति व्यवस्था से कुछ लोगों को मान सम्मान मिलने से फायदे में नजर आते हैं . उनका जाति व्यवस्था का समर्थक होना स्वाभाविक है । इसके ठीक विपरित बहुतों को जाति के नाम से अपमानित होने से विभिन्न स्तर पर हानि उठाना होता है और कई लोग जाति को छिपाने का भी प्रयास करते नजर आते हैं । ऐसे में वे जातिवाद को जितना जल्दी हो सके खत्म करना चाहेंगे । सन् 1825 में सर्व शिक्षा नीति . सन् 1919 में प्रथम भारत अधिनियम . सन् 1935 में द्वितीय भारत अधिनियम . सन् 1947 में भारत का स्वतंत्र होना तथा 26 जनवरी सन् 1950 को देश का संविधान का लागू होना भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण परिवर्तन हैं । आज भी जातिवाद के पक्ष व विपक्ष में परोक्ष या अपरोक्ष रूप से वातावरण बनते या बनाते संबंधित प्रभावित शुभ चिंतक नजर आते हैं । मानवतावाद के लिये जातिवाद का खात्मा अति आवश्यक है . जो बड़ा ही कठिन कार्य है । महापुरूषों द्वारा चलाये गये संगत . पंगत व अंगत की व्यवस्था जाति विहिन मानव समाज बनाने की दिशा में काफी कारगार साबित हुयी है । अंर्तजातीय विवाह अंगत व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है । भारतीय संविधान अंर्तजातीय विवाह व्यवस्था को न सिर्फ मान्यता देता है अपितु प्रोत्साहित भी करता है । जो भारतीय संविधान के निर्माताओं के जाति विहिन समाज व्यवस्था स्थापना की सोच को प्रदर्शित करता है । अंर्तजातीय विवाह को प्रोत्साहन भारतीय संविधान के जनक डॉ भीम राव आंबेडकर ने खुद डॉ संविता आंबेडकर से विवाह कर एक उदाहरण पेश कर दिये थे ।वर्तमान में अंर्तजातीय विवाह के प्रचलन शुरू हो चुके हैं . जो जाति

विहिन मानव समाज निर्माण की दिशा में एक कारगार कदम है । वर्तमान में प्रचलित अंर्तजातीय विवाह के स्वरूप तथा लोगों में इसकी प्रति्रिकया को भी नजर अंदाज नहीं किया जाना चाहिये । जाति व्यवस्था एक खड़ी व्यवस्था है जिसमें प्रत्येक जाति अपने आप को किसी न किसी जाति से बड़ा व छोटा महसूस करता ही है । आज भी हमारा भारत वर्ष पुरूष प्रधान देश नजर आता है और यही कारण है कि विवाह के मौके पर वर पक्ष वाले ही "अपर हेण्ड "होते हैं ।शादी अपने ही जाति विरादर में होने से किसी प्रकार का विवाद नहीं होता ।अंर्तजातीय विवाह में आमतौर पर वर पक्ष वाले ऊपर जाति वाले वधु पक्ष से संबंध स्थापित होने पर विशेष आपत्ति नहीं करते । लेकिन इसके ठीक विपरित वर पक्ष वालों का अपने से कथित नीचे जाति वाले वधु पक्ष से संबंध जोड़ने में घोर आपत्ति नजर आती है । ऐसी ही स्थिति लगभग वधु पक्ष का भी रहता है । इन परिस्थितियों में विकशित समाज / जाति को ज्यादा फर्क नहीं पड़ता । लेकिन विकासशील व अविकशित समाज / जाति के लिये अपने अस्तित्व का खतरा बन सकता है । विकासशील व अविकशित समाज / जाति को " क्रीम ड्रेन " होने से बचाना आज की सबसे बड़ी चुनौति है । ऐसी कई उदाहरण नजर आते हैं जिसमें विकशित समाज / जाति विकासशील व अविकशित समाज / जाति के पढ़ा लिखा व कमाऊ वर रूपी ्रकीम को उसके अपने समाज से निकाल कर अपने में ही विलिन कर लेते हैं और झूठी शान के चक्कर में इस बात को लड़का भी समझ नहीं पाता । इससे प्रभावित समाज को अपने समाज के्रकीम को गंवा कर ठगा सा रह जाना पड़ता है और छाछ से ही संतोष करना होता है । ऐसी हालात को भी गौर कर संतुलन की स्थिति बनाते हुये जाति विहिन समाज बनाने की प्र्रिकया से ही सार्थकता सिद्ध होगी । अपनी खुद की अंर्तजातीय विवाह की जानकारी देते हुये अपने सुखमय व संतुलित परिवार से उपस्थित जनों को अवगत करायी । साथ ही अंर्तजातीय विवाह की भविष्य के लिये शुभ कामनाये प्रदान की । इस अवसर पर श्रीमती रत्ना देशलहरे जी का स्वागत श्रीमती राजकुमारी टंडन जी ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्रीमती धानमती कोसरे जी के परिवार की ओर से था।

इसी कड़ी में 18 जनवरी (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 311 वें गुरू वंदना के अवसर पर अगला " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " का आयोजन किया गया है ।कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्य क्रम का लाभ उठावें ।

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिन्दी /अंग्रेजी दैनिक

(एफ आर जनार्दन)
संयोजक

प्रेस विज्ञप्ति

दिनॉक 07. 01 . 2010

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई "में 309 वें गुरू वंदना के अवसर पर

" टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " संपन्न

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे गुरू वंदना के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " जारी है । इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपने अपने कार्य क्षेत्र का संक्षिप्त जानकारियां क्रम बद्ध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं।

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में दिनॉक 04 जनवरी (दिन सोमवार) 2010 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 309 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री माइकल बंजारे जी वरिष्ठ सामाजिक सेवक " इन्सुरेंश व आर टी ओ की जानकारी आवश्यक — क्यों और कैसे ? (Knowloge of INSURANCE & R T O is Essetial - Why & How ? " विषय पर अपना अनुभव का टिप्स प्रदान किये । उन्होंने बताया कि इस संसार में अनवरत विभिन्न घटनाएं घटती रहती हैं ।हर घटना का कुछ न कुछ कारण अवश्य होता है । प्रत्येक घटना का परिणाम किसी भी ब्यक्ति या संस्था विशेष के लिये लाभ अथवा हानि के रूप में निरूपित होता है । घटना का स्वरूप भी वांछित अथवा अवांछित हो सकता है । दोनों ही परिस्थिति में घटना के कारण को सीख अथवा सबक के लिये जानना व समझना आवश्यक हो जाता है । आमतौर पर मनुष्य किसी घटना के कारण का स्पष्ट ज्ञाता नहीं बन पाता या हो पाता । फेक्टर ऑफ सेफ्टी का कान्सेप्ट (एकाग्रता) का अस्तित्व जिंदगी के हर पहलूओं में आ ही जाता है । देश काल परिस्थिति के आधार पर घटना आधारित नफा या नुकसान मनुष्य के ब्यक्तिगत आचार विचार, व्यवहार व संस्कार पर निर्भर करता है । चूंकि मनुष्य ही किसी परिवार, समाज , देश व संपूर्ण विश्व का इकाई होता है । अतः उसकी सुरक्षा की मनोविज्ञानिक भावना को समझकर सकारात्मक पहल किया जा सकता है । मॉं की कोंख ही किसी भी जीव जन्तु प्राणी , जिसमें मानव भी सम्मिलित है के लिये सबसे सुरक्षित स्थान होता है । मॉं के कोंख से बाहर की दुनियॉं में आने के बाद उसकी सुरक्षा के बारे में संबंधित जन अपनापन के आधार पर अपनी सहयोग प्रदान करते हैं । आगे इसी कड़ी में शासन प्रशासन व विभिन्न संस्थायें भी सहयोग के लिये आगे आते हैं। इनकी जानकारी से ही आगे का रास्ता खुल सकता है । पिछली घटनाओं से सीख व सबक लेकर वर्तमान व भविष्य के लिये अपने व अपने परिवार के लिये सुखमय व संतुलित जिंदगी जीने के लिये योजना बनाये जाने से ही संपूर्ण मानव समाज में सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा ।उन्होंने आगे बताया कि वर्तमान परिवेश में हम जोखिम भरी जिंदगी जी रहे हैं । मनुष्य द्वारा प्रकृति से खिलवाड़ करना बड़ा महंगा पड़ रहा है । आज की भागदौड़ व प्रतिस्पर्धा की जीवन से सदैव तनाव ग्रस्त होने से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव होना स्वाभाविक है । इस बदले हुये परिस्थिति में रिस्क

मैनेजमेंट की आवश्यकता बढ़ने लगी है । इंसुरेन्स रिस्क मैनेजमेंट की दिशा में प्रभावकारी तरीका है । आसान प्रीमयम के माध्यम से जोखिम से नुकसान होने की संभावना की भारपायी किया जाना ही इंसुरेन्स है । जनम जीवन व मरण ही जिंदगी के कडुवा सच है । जिसमें जनम व मरण किसी के अधीन नहीं होता । जीवन जीने का तरीका काफी हद तक खुद के ही आदत व्यवहार पर निर्भर करता है । भारतीय परिपेक्ष में सोचा जाय तो आर्थिक सामाजिक परिस्थितियाँ ही ज्यादातर जीवन को प्रभावित करता है । अधिकांश भारतीय जनता गरीबी रेखा या फिर गरीबी रेखा के नीचे जीूवन यापन करते नजर आती है । प्रचलित विभिन्न प्रकार के इंसुरेन्स जैसे ः स्वास्थ्य , जीवन , जायदाद , क्रेडित , आटोमोबाइल , बॉयलर, बाण्ड , बिसीनेस, क्राइम , डेंटल , डिपाजीट , डीसएबीलिटी , अर्थक्वेक , फ्लड आदि उपलब्ध हैं । साधारण तया इन सब इंसुरेन्स की जानकारी व कार्यान्वयन गरीबी रेखा के ऊपर वाले जनता तक ही सीमित जान पड़ती है । जबकि जान से जायदाद तक की जोखिम समस्त जनता को उठाना होता है । ऐसी परिस्थिति में इंसुरेन्स से जुड़े समस्त जनों चाहे एजेन्ट हों, अधिकारी हों, शासन प्रशासन हों , सामाजिक संस्थान हों सभी का प्रयास हो कि इंसुरेन्स संबंधी जानकारी व जागरूकता आम जनों खासकर गरीबी रेखा व गरीबी रेखा के नीचे तक की समस्त जनता तक पहुॅचे , इसकी सुनिश्चिता हो । इंसुरेन्स के साथ ही आर टी ओ संबंधी जानकारियॅा से ही आम जन अनावश्यक परेशान होने से बच सकता है । संबंधित विषय पर अपनी खुद की जानकारियॅा से उपस्थित जनों को अवगत कराये । इस अवसर पर माइकल बंजारे जी का स्वागत श्री मोहन लाल भतरिया जी ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्री छेदी लाल जोशी जी के परिवार की ओर से था।श्री छेदी लाल जोशी जी को उनके नये चार चक्के वाहन प्राप्ति के लिये बधॉई के साथ समाज की ओर से चाबी भी सौपा गया ।

इसी कड़ी में **11** जनवरी (दिन सोमवार) **2009** को शाम **6.30** बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **310** वें गुरू वंदना के अवसर पर अगला " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " का आयोजन किया गया है ।कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम का लाभ उठावें ।

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिन्दी /अंग्रेजी दैनिक
....

(एफ आर जनार्दन)
संयोजक
गुरू वंदना परिवार भिलाई दुर्ग

प्रेस विज्ञप्ति — दिनॉक **01 - 01 - 2010**

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई "में 308 वें गुरू वंदना के अवसर पर " टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " संपन्न

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे गुरू वंदना के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " जारी है । इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपने अपने कार्य क्षेत्र का संक्षिप्त जानकारियां क्रम बद्ध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं।

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में दिनॉक 28 दिसम्बर (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 308 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री शशांक जनार्दन जी एम .टेक .(बायो मेडिकल) स्टुडेंट मनीपाल युनिवरसिटी. (कर्नाटक) " वर्तमान परिवेश में बायो मेडिकल की सार्थकता । (SIGNIFICANCE OF BIO MEDICAL IN THE PRESENT SCENARIO) " विषय पर अपना अनुभव का टिप्स प्रदान किये । उन्होंने बताया कि " हेल्थ इज वेल्थ " मानव जीवन का सर्व मान्य सच्चाई है ।सृष्टि के सृजन के साथ ही मानव अपने स्वास्थ्य के प्रति हमेशा से ही सचेत रहा है । प्राकृतिक साधनों का सदुपयोग की दिशा में अनेक महत्वपूर्ण खोज हुयी है . जो अभी भी जारी हे । विज्ञान की प्रगति जीवन के हर क्षेत्र में हुयी है ।चिकित्सा के क्षेत्र में भी किसी प्रकार से कम आंका नहीं जा सकता । आज चिकित्सा के अनेकों रूप नजर आते हैं . जो अपनी अपनी विशेष पद्धति के माध्यम से मानव के साथ ही अन्य जगत के प्राणियों को भी रोग मुक्त कर सुखमय व सुविधापूर्ण जीवन प्रदान करने की दिशा में प्रयास जारी है । मानव प्रगति के साथ ही विभिन्न उपकरणों अथवा औजारों का प्रार्दुभाव समय के जरूरत के हिसाब से होते आ रहा है । सन 1960 के पूर्व से डॉक्टरों को हास्पीटल हेजार्डस से जुझते रहना पड़ा है । सन 1960 के आस पास कई मामला देखने में आता है . जिससे मेडिकल उपकरण.(इलेक्ट्रीकल शाक के लिये मेडिकल उपकरण का उपयोग) प्रयोग हुआ । मार्च 1971 के आसपास मेडिकल फिल्ड की सोच हास्पीटल हेजार्डस की हल की दिशा में अस्तित्व में आया । मेडिकल उपकरण या औजार की सुविधा ही किसी डॉक्टर अथवा हास्पीटल की महत्ता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होता है ।बायो मेडिकल इंजिनियरिंग के माध्यम से इंजिनियरिंग सिद्धांत व तरीका को मेडिकल फिल्ड में प्रयुक्त किया जाता है । अथवा यूं कहा जा सकता है कि इंजिनियरिंग व मेडिकल ज्ञान को संयुक्त रूप से बायो मेडिकल इंजिनियरिंग में उपयोग किया जाता है । इसमें बायोलाजी. (एनाटामी व फिजोलाजी) , इलेक्ट्रानिक्स . इलेक्ट्रीकल . मेकेनिकल . केमेस्ट्री . मेथेमेटिक्स . कम्प्यूटर साइन्स आदि का प्रभावकारी उपयोग लागत. उत्पादन उपकरण की दिशा में अस्पतालों में मरीजों की सुविधा के साथ ही विभिन्न उपकरणों को लगाने में सहयोग मिलता है । बायो मेडिकल की विभिन्न शाखाएँ हैं । जिसमें प्रमुख रूप से बायो इन्स्टरूमेनटेसन ः सी टी स्केन . अल्ट्रा साउण्ड . एम आर आई . इ सी जी . इ एम जी .

वेन्टीलेटर, रेडियोग्राफ , एनेस्थेसिया मशीन आदि । **बायोमटेरियलस** ः मृत आर्गन्स को उचित मटेरियल से बदलना । **क्लीनिकल इंजिनियरिंग** ः कम्प्यूटर का उपयोग मेडिकल इन्स्टरूमेनटेस का डाटा बेस बनाने में ।**बायो मेकेनिक्स** ः मेडिकल समस्या हल की दिशा में । **आरथोपेडिक्स बायो इंजिनियरिंग** ः बोन, ज्वाइंट , मसल्स कार्य, घुटने के बदलने में , दॉंत लगाने आदि । **मेडिकल साफ्ट वेयर** ः साफ्ट वेयर टुल्स , जो मानव के अंदर का चित्र बनाता है ।लेसर सिस्टम ः आपरेसन संपन्न करने में मदद जो आपथेलमोलाजी डेन्ट्रिस्ट्री, स्त्री रोग संबंधी , न्यूरो सर्जरी संबंधी होता है ।जब सिविल, मेकेनिकल , इलेक्ट्रीकल आदि ग्रीन ब्रांच हो सकते हैं तो बायो मेडिकल इंजिनियरिंग ग्रीन ब्रान्च क्यों नहीं हो सकता सिर्फ जानने व समझने की जरूरत है ।देश विदेशों में बायो मेडिकल इंजिनियरिंग की बहुत ही अच्छे अवसर उपलब्ध हैं । इससे संबंधित रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध हैं और आगे भी हो सकते हैं क्यों कि लंबे समय तक जीने की चाहत किसको नहीं होती जिसे बायो मेडिकल इंजिनियरिंग व डॉक्टर आपस में सहयोग से ही संभव है । बायो मेडिकल इंजिनियरिंग संबंधी जानकारी देते हुये बताये कि भारत के विभिन्न इंजिनियरिंग कालेजों में कोर्स है जिसकी जानकारियॉं लिया जाना संभव है । उच्च स्टेडी के लिये विभिन्न शासकीय व प्राइवेट कालेज उपलब्ध हैं ।जहॉं तक **मनीपाल युनिवसिटी** का प्रश्न है । यह संस्थान सन 1957 में अस्तित्व में आया । 52 देशों के 70 हजार से अधिक विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन रत हैं जिसकी गणना सिर्श प्राइवेट कालेजों में होती है ।इस तरह हम कह सकते हैं कि देश के हेल्थ केयर सेक्टर में वांछित गुणवत्ता लाने में बायो मेडिकल इंजिनियरिंग एक वरदान सिद्ध होगा । इस अवसर पर **शशांक जनार्दन जी** का स्वागत श्री जी एल टंडन जी ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद **कु यामिनी मधुकर** जी के परिवार की ओर से था।**श्री गिरवर बंजारे जी** व **श्री गोवर्धन लाल टंडन जी** ने भी सतनाम भजन प्रस्तुत किये ।

इसी कड़ी में 4 जनवरी (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6, 30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 309 वें गुरू वंदना के अवसर पर अगला " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " का आयोजन किया गया है ।कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम का लाभ उठावें ।

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉंक 15 - 12 - 2009

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई "में 306 वें गुरू वंदना के अवसर पर " टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " संपन्न

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे गुरू वंदना के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " जारी है । इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपने अपने कार्य क्षेत्र का संक्षिप्त जानकारियां क्रम बद्ध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं।

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में दिनॉक 14 दिसम्बर (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 306 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री डी पी बेर सेवा निवृत प्राचार्य " व्यवहारिक जीवन में 'अपन घट के ही देव ल मनइबो ' संदेश की सार्थकता।" विषय पर अपने अनुभव का टिप्स प्रदान किये । उन्होंने बताया कि मन इन्द्रि व व्यवहार का आपस में गहरा संबंध होता है । ऑख , कान , नांक , जीभ, त्वचा (शरीर स्पर्श) पांच प्रमुख इन्द्रियॉ होती हैं । मन मनुष्य का छठवां व महत्वपूर्ण इन्द्रि होती है । इन इन्द्रियों के प्रत्येक स्पर्श के कुछ न कुछ भाव उत्पन्न होते हैं, जो वेदना उत्पन्न करती है । मनुष्य में मुख्य रूप से दो तरह के भाव साक्षी भाव और भोक्ता भाव इन्द्रियों के स्पर्श से उत्पन्न होते हैं। साधारण तहः मनुष्य भोक्ता भाव में जीने का आदी होता है ,जिससे उसे समय काल परिस्थिति के अनुसार अत्यधिक दुख व सुख का अनुभव होता है । साक्षी भाव में जीने के लिये मनुष्य को विशेष प्रयास का अभ्यास करना होता है , जिससे वह अत्यधिक दुखी या अत्यधिक सुखी का महसूस न कर संतुलन की स्थिति को प्राप्त करता है । संत महापुरूष साक्षी भाव में जीने के आदी होते हैं ।इसीलिये वे सभी परिस्थितियॉ चाहे दुख का हो या फिर सुख का हो सदैव सामान्य जीवन जीते हैं, किसी प्रकार से ज्यादा प्रभावित नहीं होते । साक्षी भाव में जीने के लिये अंतः करण की आवाज को जानना व पहिचानना जरूरी होता है । अंतः करण बड़ा ही साफ सुथरा व निर्विवाद होता है । कभी भी अमानवीय आचार विचार का पक्ष नहीं लेता । अंतः करण तक जाने के लिये मनुष्य को चिंतन मनन की प्रकिया को अपनाना होता है तभी सकारात्मक चेतना प्रस्फुलित होता है ,जो मानवतावाद के समदर्शिता को एहसास कराता है । अनेक महापुरूषों ने अपनी अंतः करण की आवाज को पहिचान कर अपनी अनुभव को मानव व संपूर्ण प्राणी जगत के हित में अपने उपदेश व अमरवाणियों के माध्यम से प्रचार प्रसार का प्रयास किये हैं, कर रहे हैं । इस छत्तीसगढ़ की धरती में भी महान संत गुरू घासी दास जी ने 18 वीं सदी में अवतरित हो कर मानव समाज को व्यवहारिक ज्ञान का पाठ पढ़ाते हुये 'अपन घट के ही देव ल मनइबो ' एक बहुत ही महत्वपूर्ण, तार्किक, प्रासंगिक संदेश दिये हैं, जिस पर आज शोध करने की अत्यंत जरूरत है । बड़ी खुशी की बात है कि 'विचार मंथन कार्यक्रम ' के माध्यम से उक्त संदेश का व्यवहारिक स्वरूप आज आम जनता तक शीघ्र ही पहुँचेगा । आम तौर पर मनुष्य सुख शांति के प्राप्ति हेतु अनगिनत जगहों पर अपनी उपलब्ध साधनों के अनुसार पहुँच कर ढूढ़ने का अथक प्रयास आजीवन करते रहता है ,लेकिन

असफलता ही हाथ लगती है । जनम. जीवन व मरण के कारण को समझ ही नहीं पाता ।मरण से नीजात पाने का प्रयास असफल हो जाता है । मानव को इतना तो जरूत समझ लेना चाहिये कि जो इस संसार में आया है. उसको इस संसार से एक दिन जाना ही पड़ता है । जाने के पहले क्या किया जा सकता है . इस पर जरूर चिंतन मनन कर सकता है । उपलब्ध साधनों. अपनी कमजोरियों . प्राप्त अवसर व संभावित चुनौतियों आदि का विश्लेषण कर अपने जीवन के लक्ष्य को निर्धारित कर सकता है । ऐसे मौके पर अंतः करण की आवाज को जानने. अपने आप को पहिचानने की सख्त जरूरत है । जीवन के अनेक मोड़ होते हैं. जहॉं पर भटकने व भटकाने वालों की कमीं नहीं होती । अंतः करण की आवाज ही भटकने व भटकाने वालों से छुटकारा दे सकता हे । प्रत्येक के व्यवहार के पीछे उनके खुद के विचार . अनुभव . धारणा . के साथ ही उनके असली मूल्य का बोध होता है । मॉं बाप . परिवार . समाज आदि का संस्कार ही ब्यक्ति के आचार विचार व व्यवहार को प्रभावित करता है । आज संपूर्ण जगत सिकुड़ता नजर आ रहा है । उपलब्ध संचार व संपर्क के साधन संपूर्ण विश्व के मानव को जिदगी के हर पहलुओं पर जोड़ता नजर आता है । जिससे मानव के संस्कार में काफी परिवर्तन दिखने लगा है । पहले की सोंच व आज की सोंच में जमीन व आसमान का अंतर आने लगा है । ऐसे परिस्थिति में समन्वय व संतुलन की स्थिति पैदा करना जरूरी हो गया है ।अंतः करण की आवाज में एक रूपता होती है । आज प्रत्येक के अंतः करण की आवाज को जगाने व समझाने की दिशा में प्रयास करना होगा । जिंदगी के विभिन्न क्षेत्रों पारिवारिक . सामाजिक. आर्थिक . राजनितिक आध्यात्मिक आदि सभी स्तर पर आत्म चिंतन का असर दिखेगा जिससे 'अपन घट के ही देव ल मनइबो ' संदेश की सार्थकता सिद्ध होगी । इस अवसर पर श्री डी पी बेर जी का स्वागत श्री उत्तम लाल महिलांग जी. वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्रीमती धान बाई कोशले जी के परिवार की ओर से था।

इसी कड़ी में **21** दिसम्बर (दिन सोमवार) **2009** को शाम **6.30** बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **307** वें गुरू वंदना के अवसर पर अगला " टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " का आयोजन किया गया है ।कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम का लाभ उठावें ।

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिन्दी /अंग्रेजी दैनिक
....

(एफ आर जनार्दन)
संयोजक
गुरू वंदना परिवार भिलाई दुर्ग

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉंक **11 - 12 - 2009**

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई "में 305 वें गुरू वंदना के अवसर पर

" टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " संपन्न

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे गुरू वंदना के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " जारी है। इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपने अपने कार्य क्षेत्र का संक्षिप्त जानकारियां क्रम बद्ध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं।

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में दिनॉक 7 दिसम्बर (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 305 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्रीमती अनुसुईया जोगी जी सहायक प्राध्यापक शासकीय पं.जवाहर लाल नेहरू महाविद्यालय बेमेतरा "समाज उत्थान में हर एक की भागीदारी - क्यों और कैसे ? " विषय पर अपने अनुभव का टिप्स प्रदान की। उन्होंने बताया कि जब भी, जहॉ भी समाज शब्द का जि़क होता है एक ऐसा मानव समूह की परिकल्पना मस्तिस्क पटल पर उभर कर आता है, जो आचार विचार, रहन सहन एवं अन्य कई प्रकार से आपस में घूले मिले होते हैं। समाज की आकार व प्रकार की कोई सीमा नहीं होती। इतना जरूर है कि समाज के लिये मूल केन्द्र बिन्दू की दशा और दिशा ही समाज की आकार व प्रकार को निर्धारित करता है। मानवतावादी के केन्द्र बिन्दू संपूर्ण मानव को जोड़ कर मानव समाज की दिशा में अग्रसर होता है। विश्व के अनेक मानवतावादी महापुरूषों ने प्रेम व भाईचारा के माध्यम से संपूर्ण मानव को आपस में जोड़ने का प्रयास किये हैं। समाज उत्थान समाज निर्माण के साथ ही शुरू हो चुकी है, जो आज भी जारी है। व्यक्ति, परिवार व समाज का आपस में अटूट संबंध होता है। उत्थान और पतन भी एक दूसरे को प्रभावित करता है। ब्यक्ति जीवन से मरण तक समय काल व परिस्थिति के अनुरूप विभिन्न नाम व काम से जाना व पहिचाना जाता है, जो अंततः समाज के उत्थान को प्रभावित करता है। सृष्टि का सृजन व संचालन स्त्री व पुरूष के बिना असंभव है। स्त्री वर्ग व पुरूष वर्ग दोनों का ही समाज उत्थान के लिये होना अति आवश्यक है। मानव एक सामाजिक प्राणी है। समाज में ही रह कर सुखों व दुखों को भोगता है। बिना समाज के मानव – मानव नहीं रह जाता। इस मानव के कई रूप है जिससे मानव समाज का निर्माण होता है।

यथा ः बाल्यावस्था, युवावस्था, वृध्दावस्था या स्त्री पुरूष । समाज के विकास में हम सबकी भूमिका बड़ी ही महत्वपूर्ण होती है। जिस प्रकार जीवन का सभी हिस्सा बचपन, युवा, वृध्दा प्रत्येक के लिये जरूरी है वैसे ही समाज के उत्थान में भी सभी की भागीदारी जरूरी होती है ।

बाल्यावस्था ः बालक बालिकायें सामाजिक उत्थान का प्रारंभिक चरण है। इस अवस्था में तुम और मैं में कोई भेद नहीं होता । सब हमारा है यही भावनायें रहती है। यही विकास का प्रथम चरण होता है। बाल्यावस्था ही संपूर्ण जीवन का आधार होता है। इस अवस्था में जिस प्रकार से व्यवहार

व गुणों का विकास होता है, भविष्य भी इन्हीं विचारों से निर्मित होता है। यदि बचपन से ही सत्कर्म, सत्मार्ग का पाठ पढ़ाया जाय तो स्वच्छ व सुविस्तृत रास्ता समाज के लिये निर्मित होता है।

युवाओं का योगदान ः समाज के विकास में युवाओं की भूमिका इसलिए है, क्यों कि युवा तो समाज रूपी भवन के स्तंभ है । इन्हीं युवाओं के हाथों में समाज का स्वरूप बनता है तथा समाज इन्हीं के योगदान से पल्लवित व विस्तारित होता है। युवा पीढ़ी ही विस्तृत विषयों की ओर समाज को ले जाता है। स्वतंत्रता, समानता, सफलता, विकास, निर्माण, उत्थान का सम्मिलित रूप ही युवावस्था है। इस उम्र में लगभग युवा आत्म निर्भर तथा पोषक के रूप में सब के सामने एक आदर्श बन बैठता है। कुछ पाने की चाहता, कुछ कर गुजरने का साहस, कुछ जानने की जिज्ञासा इन सबको सही मायने में परिणित करने की उम्र यही है। इन सब गुणों की खान युवा सफल हो कर समाज के उत्थान में अग्रणी भूमिका निभाता है। संपूर्ण समाज के लिये सोचने की हिम्मत व हौसला इस उम्र में अधिक होती है।

महिलाओं की भूमिका ः समाज के विकास और मानव के कल्याण में महिलाओं की भूमिका को शब्दों में बांधना बड़ा ही कठिन कार्य है । नारी मानव की जननी है । नारी ज्ञानवती होगी तो ज्ञानी संतान को जन्म देगी । माता शिक्षित होगी तो बच्चों व परिवार को शिक्षित बनाएगी । नारी के अनेक रूप हैं और हर रूप में वह समाज को पूर्णता प्रदान करती है । नारी माता के अतिरिक्त बहन ,बेटी , सखी , हर रूप में समाज की सहायिका है । हर रूप में वह अपने कर्तब्यों का निर्वाह निस्वार्थ भाव से करती है । नारी न सिर्फ सहयोगी है वरन वह खुद आत्म निर्भर होकर आज पुरूषों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चल रही है । घर, बाहर , धरती, आकाश कहीं पर भी भी उनकी कामयाबी के झंडे हम देख सकते हैं, जिसकी कई उदाहरण सबके सामने है , जिसको बताने की जरूरत नहीं है । इतना तो मानना पड़ेगा कि पुत्र निज कुल को ही तारता है लेकिन पुत्री दो कुलों को तारती है ।

बुजुर्गो की भूमिका ः जिस प्रकार एक मकान में छत के बिना सुरक्षा नहीं महसूस की जाती , उसी प्रकार मानव समाज रूपी भवन में बुजुर्ग रूपी छत का योगदान है । समाज में बुजुर्गो का सम्मानीय स्थान है क्यों कि उन्हीं के अनुभवों से समाज को उत्थान की ओर ले जाने में हमें सहायता मिलती है । बुजुर्ग व्यक्ति अत्यधिक व्यवहारिक तथा समाज के सभी लोगों को जोड़ने की कड़ी होती है । उनका त्याग तथा जीवन हमारे सामने एक प्रेरणाकारक दर्पण की भांति दिखाई देता है, बुजुर्गो के अनुभव से ही समाज सही आकार को प्राप्त करता है क्यों कि समाजिक उत्थान के लिये एक पूर्ण जीवन का सुलझा हुआ रूप आसानी से मिल जाता है । इस अवसर पर श्री मती अनुसुईया जोगी जी का स्वागत श्री घना राम ढींढे जी, वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्रीमती अनुसुईया जोगी जी के परिवार की ओर से था।

इसी कड़ी में 14 दिसम्बर (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 306 वें गुरू वंदना के अवसर पर अगला " टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " का आयोजन किया गया है ।कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम का लाभ उठावें ।

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिन्दी /अंग्रेजी दैनिक
....

(एफ आर जनार्दन)
संयोजक
गुरू वंदना परिवार भिलाई दुर्ग

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉक 14 - 11 - 2009

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई "में 301 वें गुरू वंदना के अवसर पर
" टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " संपन्न

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे गुरू वंदना के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " जारी है । इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपने अपने कार्य क्षेत्र का संक्षिप्त जानकारियां क्रम बद्ध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं।

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में दिनॉंक 9 नवम्बर (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 301 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्रीमती कावेरी नवरंगे जी सक्रीय सदस्या सतनाम महिला समिति सेक्टर 4 भिलाई " भारतीय नारी के बढ़ते कदम । " विषय पर अपने अनुभव का टिप्स प्रदान की । उन्होंने बताया कि मेल व फिमेल की सक्रीय भूमिका के बगैर सृष्टि का सृजन व संचालन असंभव है । मानव जगत में नर व नारी जिंदगी के सिक्के के दो पहलू हैं . जिसको कभी अलग नहीं किया जा सकता ।मानव समाज के संपूर्ण विकाश में प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी की विशेष भूमिका होती है । भागीदारी से ही अपनापन की भावना जागृत होती है ।अपनापन की भावना प्रेम व भाईचारा से ओत प्रोत होने से जिंदगी के हर स्तर पर जीवन को सुखमय बनाता है और विश्व कल्याण की भावना को विकशित करता है । इतिहास बताता है कि हमारे देश में समानुपातिक भागीदारी के लिये सदियों से संघर्ष चलते रहा है . जो आज भी जारी है । शुरू से ही हमारा देश पुरूष प्रधान देश के नाम से पहिचाना जाता रहा है और आज भी इस दिशा में उल्लेखनीय प्रगति करना शेष है । पुरूष प्रधान देश होने के नाते महिलाओं को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा है । अज्ञानता व अंजानता समस्याओं का मूल कारण होता है । अज्ञान व अंजान व्यक्ति या समाज को आसानी से गुलाम व लाचार बनाया जा सकता है । गुलामी व लाचारी से आत्म सम्मान गिरवी चली जाती है । इसीलिये असमता के पोषक व चालाक लोग शिक्षा के चाबी को हमेशा ही अपने पास रखने की भरपूर कोशिष किये हैं. करते रहे हैं । सुखद पहलू है कि इस देश में भी कई मानवतावादी संतों. महापुरूषों ने जन्म ले कर संपूर्ण मानव समाज में शिक्षा का प्रचार प्रसार कर उन्हें जिन्दगी के प्रत्येक क्षेत्रों में जागृत करने का प्रयास किये हैं । सन् 1825 से सर्व शिक्षा अभियान शुरू होने के बाद शिक्षा का प्रचार प्रसार श्रृखला का शंखनाद हुआ । 19 वीं सदी में महात्मा ज्योतिबा फूले जी ने शिक्षा के महत्व को काफी बारीकी से समझा व अशिक्षा को ही सभी समस्याओं का मूल कारण बताया । उन्होंने नारी शिक्षा को सर्वोपरी मानकर अपनी पत्नी सावित्री बाई फूले को सर्व प्रथम शिक्षित कर अन्य वंचित समाज के महिलाओं को भी शिक्षित करने का बीड़ा उठाया । सर्व विदित है कि सावित्री बाई फूले जी को शिक्षा प्रचार प्रसार की दिशा में काफी मुश्किलों का सामना पड़ा था लेकिन वे कभी भी प्रतिकूल परिस्थितियों से विचलित नहीं हुयीं । भारतीय संविधान के प्रावधानों के चलते आज माहौल बदली बदली सी नजर आती है । पुरूष प्रधान देश होने की मान्यता में परिवर्तन होने की सिलसिला पारंभ हो चुका है । जिंदगी के हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी निरंतर बढ़ने लगी है । वर्तमान परिवेश में राजनीति

के क्षेत्र में महिलाओं के सक्रीय व प्रभावकारी भूमिका से कोई भी इंकार नहीं कर सकता । आज ऐसा कोई भी अछूता क्षेत्र नहीं हैं . जिसमें महिलाओं का दखल न हों व अपनी काबिलियत की छाप न छोड़ें हों । यह सब भागीदारी प्रदान कर उनकों भी अवसर प्रदान करने से ही संभव हो पाया है । हालाकि इस दिशा में और भी प्रयास करने व जिंदगी के संस्कार में लाने की जरूरत है । पुरूष व महिलाओं में समानुपातिक प्रतिनिधित्व से ही मानव समाज में सर्वागिण विकाश संभव है । सदियों से शिक्षा से वचित रहे समाज में नारी शिक्षा का कुछ ज्यादा ही आवश्यकता जान पड़ती है । संबंधित समाज के पुरूष वर्ग को इस गहन व महत्वपूर्ण विषय पर विचार मंथन कर रास्ता निकालना होगा । मॉ. पत्नी . बहू . बहन आदि अनेक रूपों में महिला अपनी सक्रीय व सकारात्मक भूमिका निबाह कर परिवार. समाज. देश के साथ ही संपूर्ण विश्व में जिंदगी के हर क्षेत्र में संतुलन प्रदान करने में सहयोग कर सकती हैं । हमारे छत्तीसगढ़ की धरती में भी अनेक महिलाओं ने समाज में .विशेष कर महिला समाज में आपसी संपर्क व सहयोग की भावना पैदा कर भागीदारी के साथ आत्म स्वाभिमान को बढ़ाने की दिशा में अथक प्रयास किये हैं ।इस कड़ी में स्व मिनीमाता जी को कभी भुलाया नहीं जा सकता है । इस अवसर पर श्रीमती कावेरी नवरंगे जी का स्वागत श्री एफ आर जांगड़े जी सेवा निवृत तहसीलदार बिलासपुर ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्री देव प्रसाद नवरंगे जी के परिवार की ओर से था ।श्री देव प्रसाद नवरंगे जी को उनके **67** वें जन्म दिवस पर गुरू वंदना परिवार की ओर से बधॉइयां दे कर सम्मान किया गया।

इसी कड़ी में **16** नवम्बर (दिन सोमवार) **2009** को शाम **6.30** बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **302** वें गुरू वंदना के अवसर पर अगला " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " का आयोजन किया गया है । कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम का लाभ उठावें।

(एफ आर जनार्दन)
संयोजक
गुरू वंदना परिवार. भिलाई दुर्ग

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिंदी /अंग्रेजी दैनिक
....

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉक **09 - 11 - 2009**

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई "में **300** वें गुरू वंदना के अवसर पर
" टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " संपन्न

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे गुरू वंदना के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " जारी है। इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपने अपने कार्य क्षेत्र का संक्षिप्त जानकारियां क्रम बद्ध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं।

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में दिनॉक 2 नवम्बर (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6 .30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 300 वें गुरू वंदना के अवसर पर डॉ प्रकाश रात्रे जी डेंटल विशेषक्ष . प्रकाश डेंटल क्लीनिक उतई " दॉत के दर्द को जानने व समझने की आवश्यकता — क्यों और कैसे ? " विषय पर अपने अनुभव का टिप्स प्रदान किये । उन्होंने बताया कि नि ः संदेह मानव प्रकृति की सर्व श्रेष्ठ कृति है । परिवार, समाज, राष्ट्र के साथ ही संपूर्ण विश्व की इकाई ब्यक्ति ही होती है । वर्तमान विश्वीकरण से जिंदगी के प्रत्येक क्षेत्रों में दूरियॉं बहुत ही कम हो गई है। जिससे प्रत्येक ब्यक्ति का एक इकाई होने के नाते , उनका अहमियत बढ़ गयी है। आज व्यक्ति का संतुलन ही विश्व के संतुलन को स्थायित्व प्रदान करने में सहायक सिद्ध होता है। स्वस्थ्य तन और मन ही मानव जीवन के संतुलन का आधार है। तन व मन को स्वस्थ्य रखने के लिये जिंदगी के हर स्तर पर ब्यक्तिगत के साथ ही सामूहिक रूप से उपलब्ध साधनों के सहयोग से प्रयास जारी है। जहॉं तक मनुष्य के तन का सवाल है , विश्व के चिकित्सा जगत इस गंभीर एवं महत्व पूर्ण उपयोगी क्षेत्र में लगातार शोध कर मानव जीवन को सुखमय दिशा में अग्रेसित करते आ रहा है । मानव के विभिन्न अंग होते हैं ., जिनका अपना अलग अलग महत्व होता है। मनुष्य के मुखड़ा में भी विभिन्न अंग स्थित हैं ., जिनका भी विशेष महत्व हैं । मनुष्य के मुखड़ा से ही उसकी अपनी पहिचान के के साथ ही कोई भी फेस रीडर शारीरिक व मानसिक स्थिति को आसानी से भांप लेता है ।मुखड़ा में सम्मिलित मुंह के भीतर दॉंतों का भी एक अलग ही पहिचान है । डेंटल कालेज का अलग से अस्तित्व में आना ही दॉंतों संबंधी जानकारी की आवश्यकता एवं महत्वपूर्णता को प्रर्दशित करता है। मोटे तौर पर दॉंतों के कार्य. भोजन को चबाने व स्वाद के एहसास के साथ ही सुपाच्य बनाने, तन को स्वस्थ्यता, मुख को सुन्दरता प्राप्त करने, बातचीत में सहायक आदि हम सभी को पता है। दॉत व मुॅह में होने वाले सामान्य रोगों संबंधी जानकारियॉं भी आवश्यक है ः जिसमें दॉतों का दर्द, दॉंतों में सड़न (कीड़ा लगना) सड़न, मुॅह एवं मसूड़ों में बार बार छाला पड़ना, पायरिया, दॉंतों में ठंडा गर्म एवं किनकिनाहट का एहसास होना आदि सामान्य हैं। पायरिया ः दॉंतों का सबसे हानिकारक रोग है। इसकी शीघ्र चिकित्सा न कराई जाय तो पाचन क्रिया की विकृति के साथ अनेक रोग लग जाते हैं। पायरिया से बहुत जल्दी दॉंत नष्ट हो जाते हैं । यह अत्यंत मंद गति से बढ़ कर कुछ ही वर्षो में पूर्ण विकाशित हो जाता है। पायरिया के रोगों के कीटाणु का मसूड़ों में प्रवेश प्रारंभ अवस्था में चुपके से होता है , पता चल ही नहीं पाता ।मधुमेंह

व रक्तचाप आदि रोगों से अत्यधिक दुर्बल हो जाने से तथा दॉंतों के मैले हो जाने से पायरिया धावा आसानी से कर लेता है। पायरिया रोग के प्रमुख लक्षण ः मसूड़े फूल जाते हैं. उसे दबाने से रक्तस्राव होता है। जीभ पर पपड़ी सदृश्य जमीं हुयी दिखती है । दॉंत में दर्द , टीस, कनकनी होने से भोजन में कोई रूची का नहीं होना। भोजन चबाने में असमर्थता। मुख से दुर्गंध का होना। अंत में मसुड़ों में सिकुड़न हो कर दॉंत हिलने लगता है। दातुंन या ब्रस करने से मसुड़ों से रक्तस्राव के साथ पीव भी निकल सकता है। यह बीमारी धीरे धीरे बढ़ती है। प्रथम चरण को जिंचिवाइटिस कहते हैं। मसुड़े मुलायम पड़ जाते हैं तथा उसमें जलन होती है। बैक्टिरिया के कारण कुन आने लगता है ।संक्रमण के कारण दॉंत की जड़ें कामजोर होने से हिल कर टुटना शुरू हो जाता है। पायरिया की प्रथम, द्वितीय व तृतीय अवस्था के अनुसार से रोग उग्र होते जाता है और अंत में एक एक कर के सभी दॉंत हिल कर गिर जाते हैं, मुँह से रक्तस्राव व मवाद का निकलना बढ़ जाता है , मुँह से तीव्र दुर्गंध आने लगती है। पायरिया रोग की चिकित्सा विधि ः पायरिया का रोगी दन्त चिकित्सक के पास प्रायः तभी पहुँचता है जब रोग अपने तीव्रतम अवस्था में पहुँच चुका होता है। मसूड़े न केवल मवाद से भर गये होते हैं बल्कि परी तरह सड़ गल गये होते हैं। उपचार की दिशा में ः सर्व प्रथम दॉंतों एवं मसूड़ों की मशीन द्वारा सफाई करानी चाहिये। मसूड़ों में पायरिया फैलाने वाले बैक्टिरिया के नाश के लिये आधुनिक एलोपेथीक एण्टी बायटिक्स , माउथ वाश मलहम आदि का प्रयोग करना चाहिये। रक्त की कमी की आपूर्ति के लिये आयरन्स और विटामिन्स विशेषतया विटामिन बी काम्पलेक्स की गोलियॉं लेनी चाहिये। उन्होंने विशेष सावधानियॉं के संबंध में बताया कि ः साधारण तया हर छ ः महिने के अंतराल में दॅंत चिकित्सक से संपर्क बनाये रखें। गरम खाने के बाद कभी ठंडा का सेवन न करें। सुबह एवं रात्रि में ब्रस से दॉंतों की सफाई करें। मीठा एवं कुछ भी खाने के बाद कुल्ला अवश्य करें। इस अवसर पर डॉ प्रकाश रात्रे जी का स्वागत श्री रमेश कुमार बघेल जी ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्री हेमंत सिंह के परिवार की ओर से था।

इसी कड़ी में **9** नवम्बर (दिन सोमवार) **2009** को शाम **6.30** बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **301** वें गुरू वंदना के अवसर पर श्रीमती कावेरी नवरंगे जी सक्रीय सदस्या सतनाम महिला समिति सेक्टर **4** भिलाई " भारतीय नारी के बढ़ते कदम । " विषय पर अपने अनुभव का टिप्स प्रदान करेंगीं । कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम का लाभ उठावें।

(एफ आर जनार्दन)
ब्यूरो चिफ

संयोजक
गुरू वंदना परिवार भिलाई दुर्ग

लोक प्रिय हिंदी /अंग्रेजी दैनिक

प्रेस विज्ञप्ति

दिनॉक 04 - 11 - 2009

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन चिंगरी (अण्डा) जिला दुर्ग "

के 121 वें गुरू वंदना के अवसर पर

" अपन घट के ही देव ल मनइबो " विषय से

" विचार मंथन कार्यक्रम " श्रृखला का उद्‌घाटन संपन्न

SERIES OF VICHAR MANTHAN PROGRAMME LAUNCHED

वर्तमान परिवेश में सतनाम को मानने वाले पूरे विश्व में करोड़ों की सख्या में नजर आते हैं। आपस में संपर्क एवं सहयोग की अभाव से ताकत का एहसास नहीं हो पाता। छत्तीसगढ़ की धरती में भी सतनाम के मानेन वालों की कमी नहीं है। स्पष्ट है कि संपर्क एवं सहयोग तथा एक रूपता के अभाव में सतनाम की लहर नहीं बन पाई । प्रत्येक सोमवार को सामूहिक गुरू वंदना, गुरू आरती व चिंतन मनन की प्रकिया से कुछ आशा की किरण नजर आने लगी है। टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्य क्रम के माध्यम से समाज में उपलब्ध अनुभवों के आदान प्रदान से जागृति का संचार होने लगा है। इसमें प्रींट मीडिया का अपेक्षित सहयोग मिलते आ रहा है । " विचार मंथन कार्यक्रम" का प्रारंभ (LAUNCHING OF VICHAR MANTHAN PROGRAMME) समाज को विभिन्न विषयों पर विचार मंथन कर उचित दिशा प्रदान कर व्यवहारिकता की ओर अग्रसर कर प्रेम व भाई चारा की लहर प्रदान करने में सहयोग मिलेगा । गुरू घासीदास जी के अत्यंत महत्वपूर्ण संदेश "अपन घट के ही देव ल मनइबो " विषय से प्रारंभ होने का भी एक विशेष महत्व है । " विचार मंथन कार्य क्रम " श्रृंखला गुरू वंदना केन्द्र चिंगरी से 121 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनॉक 2 नवम्बर 2009 को प्रारंभ हुआ ।

कार्यक्रम के मुख्य अथिति श्री एफ आर जनार्दन जी संयोजक गुरू वंदना परिवार भिलाई एवं सहायक महाप्रबंधक भिलाई इस्पात संयंत्र भिलाई थे। विशेष अतिथि गणों में गुरू वंदना परिवार भिलाई से श्री टी आर टंडन जी व श्री राजेन्द्र कुमार बंजारे जी तथा ग्राम चिंगरी के डॉ खेम लाल दिल्लीवार जी थे। अतिथियों द्वारा गुरू गद्दी में दीप प्रज्वलन के बाद सामूहिक गुरू वंदना व गुरू आरती के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। श्री बी आर बंजारे जी संयोजक गुरू वंदना परिवार चिंगरी द्वारा स्वागत भाषण के साथ गुरू वंदना केन्द्र द्वारा विगत दो वर्षो में सपन्न विविध कार्यक्रमों की विस्तार से जानकारियां प्रदान की गई । बच्चों व महिलाओं द्वारा स्व मिनी माता वंदना, प्रहसन जैसे को तैसा व आत्म विश्वास तथा रिकार्डिग डांस का रंगारंग प्रस्तुती दी गई , जिसे उपस्थित जनों द्वारा प्रोत्साहान राशि देकर सराहा गया ।

मुख्य अतिथि श्री एफ आर जनार्दन जी ने वर्तमान परिपेक्ष में " विचार मंथन कार्यक्रम " की सार्थकता पर प्रकाश डालते हुये बताया कि वर्तमान में मानव समाज के समक्ष विभिन्न प्रकार के विचार विशेष कर गुरूओं व महापुरूषों से संबंधित दिशा व निर्देश उपलब्ध हैं । प्रत्येक ब्यक्ति अपनी अपनी जानकारियॉं के अनुसार ब्याख्या कर उसे ही सही प्रमाणित करने के प्रयास में लगे नजर आते हैं । सर्व मान्य नहीं होने से व्यवहारिकता से परे हो जाते हैं । ऐसी अवस्था में विचार मंथन की अहमियत जान पड़ती है । जिस तरह दही को मथ कर मक्खन से घी व छाछ को अलग कर

आवश्यकतानुसार उपयोग में लाया जाता है । विचारों के मंथन से भी उसमें छिपी हुयी रहस्य को समझ कर मानव उपयोगी बनाकर आम जनों तक फैलाने व व्यवहारिक बनाने में मदद मिलेगी । विचार मंथन की प्रक्रिया को अनवरत चलाना मानव समाज के हित में होगा । जिससे सिद्धांत, सिद्धांत तक ही सीमित न रह कर व्यवहार में आने से आम जनता इससे लाभान्वित होगी। विश्व कल्याण की भावना की लहर बनन- बनाने में सहायक सिद्ध होगी। गुरू घासीदास जी के महत्वपूर्ण संदेश "अपन घट के ही देव ल मनइबो " विषय पर ध्यान आकर्षित करते हुये उन्होंने बताया कि विश्व में सजीव व निर्जीव प्रकृति की कृति विद्यमान हैं। दोनों में ही विभिन्न अवस्था के अनुरूप जड़ व चेतन का बोध होता है। मानव सृष्टि की सर्व श्रेष्ठ कृति मान जाता है जिसके पास तन के साथ मन भी होता है। तन का संचालन मन से होता है । मन चेतना से संचालित होता है । ज्ञान. विवेक व बुद्धि के साथ ही शारीरिक अवस्था सत्व. रज वात जिसे आयुर्वेदिक भाषा में वात . कफ व पित्त भी कहा जाता है . चेतना को प्रभावित करता है । अचेतन . सुसुप्त . अर्धचेतन. चेतन व सचेतन आदि चेतना के विभिन्न स्वरूप के साथ ही इसका सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है । सकारात्मक चेतना प्रेम व भाईचारा पर आधारित सत् अथवा प्राकृतिक की ओर अग्रेसित होता है । इसके ठीक विपरित नकारात्मक चेतना घृणा व षिमता पर आधारित असत् अथवा अप्राकृतिक की ओर प्रेरित करता है । क्षण क्षण मानव स्वभाव की अवस्था इन्द्रियों के अनुभव के आधार पर बदलता रहता है । मानव स्वभाव दस प्रचलित व चर्चित अवस्था अथवा संसार में अनुभव करते नजर आता है। एक ओर जहॉ नर्क (Hell), भुख(Hunger), जंगली व्यवहार (Animality) व गुस्सा (Anger) चारों को दुषित मार्ग कहा जा सकता है। वही दूसरी ओर मानवीय (Humanity), स्वर्गीय एहसास (Rapture or Heaven) जीवन के सुखद पहलू हैं। इसके साथ ही क्रमशः सीखना या अध्ययन करना (Learning), आंतरिक एहसास, चिन्तन या भीतर से महसूस करना (Realisation), ज्ञानबोध, चेतन या बोधीसत्व (Bodhisatva) व सचेतन या बोधीपन (Buddhahood) प्राप्ति पर सुखद अनुभव की अवस्था प्राप्त होता है। अपने घट या अंत ः करण में इन अवस्थाओं को अवलोकन करने के साथ ही साथ सतचेतना को जागृत कर उसे व्यवहार में लाने से मनुष्य को इधर उधर भटकने की जरूरत नहीं होती। अपने आप को भ्रमित होने से आसानी से बचाया जा सकता है। आज हमें अपने आप को जानने व समझने की जरूरत है। यही गुरूओ की मानव समाज के लिये सीख है। हर युग, काल, परिस्थिति में सकारात्मक व नकारात्मक चेतना का परिणामी प्रभाव परिलक्षित होता है, जिसका भी मंथन सीख अथवा सबक के लिये आवश्यक है

अन्य अतिथियों ने भी अपने अपने विचार रखते हुये कार्यक्रम की प्रशंसा किये। अतिथियों द्वारा कक्षा 1 से 12 वीं तक के छात्र छात्राओं को, दिनॉक 10 अगस्त 2009 को आयोजित सतनाम ज्ञान प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वालें क्रमश ः मि प्रदीप कुमार बांधे, कु लक्ष्मी टंडन व मि मनीस कुमार बंजारे को पुरस्कृत किया गया। विभिन्न प्रकार के आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम के कलाकारों कु रेशमा, कु लाखी, कु देविका, कु लक्ष्मी कु प्रीति, कु अंकिता, निर्देशिका श्रीमती

खेमन देशलहरे जी को तथा गुरू वंदना कार्यक्रम में विशेष सहयोग करने के लिये, कु गीता रात्रे व कु गायत्री रात्रे आदि सभी को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रअम का सफल संचालन श्री शिव नारायण बंजारे जी ने किया।आभार प्रदर्शन श्री बी आर बंजारे जी ने किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में समस्त ग्रामवासियों का पूर्ण योगदान रहा ।

प्रति

(बी आर बंजारे)
संयोजक
गुरू वंदना परिवार
चिंगरी (अण्डा) जिला दुर्ग

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिन्दी /अंग्रेजी दैनिक ....
....

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई "में 299 वें गुरू वंदना के अवसर पर
" टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " संपन्न
TIPS OF THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे गुरू वंदना के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " जारी है । इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपने अपने कार्य क्षेत्र का संक्षिप्त जानकारियां क्रम बद्ध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं।

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में दिनॉक 26 अक्टूबर (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6 .30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 299 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री विनोद कुमार राय जी एम टेक (कम्प्यूटर) स्टुडेण्ट . एन आई टी रायपुर " कम्प्यूटर का मानव जीवन पर प्रभाव — सतर्कता कहॉं तक ? " विषय पर अपना अनुभव का टिप्स प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि मानव विकाश की प्रारंभिक अवस्था की सबसे बड़ा अविष्कार पहिये की खोज रहा है । ठीक उसी प्रकार 20 वीं सदी का सबसे महत्वपूर्ण अविष्कार कम्प्यूटर को कह सकते हैं । कम्प्यूटर ने दुनियॉं में भौगोलिक . सांस्कृतिक और आर्थिक दूरियों को मिटाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है । कम्प्यूटर तकनीकि एक राष्ट्रीय व्यवस्था के भीतर समुदायों को इकट्ठा करने में मददगार की भूमिका निभा रही है । जब हम आम आदमी के लिये कम्प्यूटर या हर किसी के लिये ब्रॉडबैंड जैसे स्लोगन सुनते हैं या पढ़ते हैं तो पता चलता है कि कम्प्यूटर का जमाना आ गया है ।

भारत में कम्प्यूटर और आधुनिक संचार की शुरूवात सन् 1986 में माना जा सकता है । तत्कालिन शासन प्रशासन व्यवस्था में टेक्नोक्रेट्स और मैनेजरों से अवगत होने का अवसर प्राप्त हुआ तथा संचार क्रांति की लहर चल सी पड़ी । आज के इस मशीन युग में हम सबेरे उठने से लेकर रात

को सोने तक कम्प्यूटर का उपयोग विभिन्न रूपों में करते हैं ।बिजली का बिल भरना , टेलीफोन का बिल भरना, ए टी एम से पैसा निकालना आदि सभी कार्य कम्प्यूटर के माध्यम से होने से समय का बचत हो रहा है । आज घर बैठे रेलवे टिकट , एयर टिकट कम्प्यूटर के माध्यम से होने से लंबी कतार व बिचौलियों से बचा जा सकता है । परिजनों, संबंधियों के अलावा अन्य किसी वांछित लोगों व जगहों पर पत्राचार ई मेल के द्वारा कुछ ही सेकेण्ड में दुनियॉं के किसी भी कोने में भेजा जा सकता है । इंटरनेट बैंकिंग की माध्यम से पूरे विश्व में कहीं भी सिर्फ एक क्लीक से पैसा पहुँच सकता है । आज हम अपने दूरस्थ वांछित जनों से एक दूसरे को देखते हुये वीडियो कांफ्रेसिंग से अपनी बात आसानी से कर सकते हैं । मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को कम्प्यूटर ने प्रभावित किया है । शिक्षा के क्षेत्र में : प्राथमिक शिक्षा में उपयोगी बहुत से साफ्टवेयर आते हैं , जो शिक्षा को रोचक तथा मनोरंजक बना देता है ,जिससे बच्चे आसानी से समझ सकते हैं ।आज के प्रतियोगी वातावरण में उच्च शिक्षा का महत्व बढ़ गया है । किसी एक विषय की जानकारी एक ही पुस्तक में मिल पाना संभव नहीं है । परन्तु कम्प्यूटर के माध्यम से ई बुक , वेब पेज और अनेक प्रकार के टेक्नीक का उपयोग कर वांछित जानकारियॉं आसानी से मिल जाता है । परीक्षा परिणाम भी तुरंत देखा जा सकता है । कृषि व मौसम के क्षेत्र में : पारंपरिक कृषि के अलावा आधुनिक पद्धति को जाने में मदद मिलती है । फसल का उपयुक्त मौसम के अलावा बीजों को हाईब्रीड करने के लिये जीनों की जानकारी भी कम्प्यूटर से संभव है । मौसम की भविष्य वाणी से हर प्रकार की सतर्कता लिया जा सकता है । रोजगार के क्षेत्र में : आई टी क्षेत्र , न्यूज सेंटर में कम्प्यूटर आपरेटर , मल्टी मिडिया डेवलोपर के अलावा विभिन्न प्रकार के रोजगार की आसानी से जानकारियॉं मिल जाती है । व्यवसाय के क्षेत्र में : कम्प्यूटीकरण ने भारतीय बैकों को नई क्षमता से लैस कर दिया है । जिससे बैंकों की लागत कम होने के साथ ही साथ व्यवसाय की रफ्तार कई गुनी बढ़ती जा रही है । शेयर टे्डिंग , मनी ट्रांसफर , ऑन लाइन ट्रेडिंग,केड की उपयोगिता इत्यादि तीव्र गति से चालू हो गया है ।कम्प्यूटर हमारे देश के मजबूत अर्थब्यवस्था का एक स्तंभ है । आई टी क्षेत्र के आने से हमारे देश की विकाश दर दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है । सूचना व संचार के क्षेत्र में : संचार का माध्यम तीव्र व कम खर्चीला हो गया है । मोबाइल, दूरभाष , ई मेल , वीडियो कान्फ्रेसिंग , चेटिंग इत्यादि । वैज्ञानिक क्षेत्र में : कम्प्यूटर की माध्यम से अंतरिक्ष में उपग्रह भेजना आसान है । दूरियों का आकलन आसानी से हो सकता है । प्रक्षेपास्त्रों का संचालन कम्प्यूटर से किया जाता है । चंद्रयान 1 इसी का उदाहरण हे । मनोरंजन के क्षेत्र में : स्पेसल इफेक्ट से फिल्मों को और भी रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जा रहा है । एडिटींग, मिक्सिंग के अलावा अब तो पूराने समय के क्लासीकल ब्लैक एण्ड व्हाइट फिल्मों को कम्प्यूटर के माध्यम से रंगिन बनाकर प्रस्तुत किया जा रहा है । मुगल ए आजम , नया दौर इसका उदाहरण है । डिफेंस के क्षेत्र में : सुरक्षा के क्षेत्रमें कम्प्यूटर का उपयोग जरूरत व चाहत के हिसाब से किया जा रहा है ।चिकित्सा के क्षेत्र में : टेली

मेडिसिन के द्वारा दूरस्थ बैठे डॉक्टर से कंसल्ट कर उनकी सेवाये प्राप्त किया जाना संभव है ।वर्त मान में कम्प्यूटर लगभग सभी की जरूरत व चाहत नजर आने लगी है । विभिन्न वांछित भाषाओं में कम्प्यूटर उपलब्धता से इसकी चाहत और भी बढ़ती जा रही है । इन समस्त सुविधाओं के बावजूद कम्प्यूटर का सुरक्षित उपयोग का होना बहुत ही जरूरी है अन्यथा विपरीत असर होने का खतरा हमेशा बना होता है । जोश के साथ होंश का होना नितांत जरूरी है ।आज विकृत मानसिकता वालों की भी कमी नहीं है जो इसकी दुरूपयोग को बढ़ाने की दिशा में लगे हुये हैं । इस क्षेत्र में जानकार लोगों का कर्तव्य बन जाता है कि वे कम्प्यूटर के दुरूपयोग को रोकने की चुनौति को स्वीकार करें । इस अवसर पर श्री विनोद कुमार राय जी का स्वागत कु. हेमलता कुर्रे जी ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्री एच एल घिदोड़े जी एवं श्री रमन लाल महिलांग के परिवार की ओर से था ।

इसी कड़ी में 2 नवम्बर (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 300 वें गुरू वंदना के अवसर पर डॉ प्रकाश रात्रे जी डेंटल विशेषक्ष . प्रकाश डेंटल क्लीनिक उतई " दॉंत के दर्द को जानने व समझने की आवश्यकता — क्यों और कैसे ? " विषय पर अपने अनुभव का टिप्स प्रदान करेंगे । कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम का लाभ उठावें।

(एफ आर जनार्दन)
संयोजक
गुरू वंदना परिवार भिलाई दुर्ग

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिंदी /अंग्रेजी दैनिक
....

आमंत्रण दिनॉक 29 - 10 - 2009

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन चिंगरी (अण्डा) जिला दुर्ग "
के 44 वें गुरू वंदना के अवसर पर
" विचार मंथन कार्यक्रम " का प्रारंभ

LAUNCHING OF VICHAR MANTHAN PROGRAMME

विषय :- अपन घट के ही देव ल मनइबो ।

स्थान - गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन चिंगरी (अण्डा) जिला दुर्ग "

दिनॉंक - 2 नवम्बर 2009 (दिन सोमवार) समय- शाम 4 : 00 बजे

आदरणीय संत जनों

जय सतनाम

वर्तमान परिवेश में सतनाम को मानने वाले पूरे विश्व में करोड़ों की सख्या में नजर आते हैं। आपस में संपर्क एवं सहयोग की अभाव से ताकत का एहसास नहीं हो पाता। छत्तीसगढ़ की धरती में भी सतनाम के मानेन वालों की कमी नहीं है। गुरू घासीदास जी व गुरू बालकदास जी द्वारा बताये गये सतनाम के रास्ते पर चलने को आज भी तैयार नजर आते हैं। संपर्क एवं सहयोग तथा एक रूपता के अभाव में सतनाम की लहर नहीं बन पा रही है। विगत 9 फरवरी 2004 से सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई को केन्द्र बिन्दु बनाकर संपूर्ण छत्तीसगढ़ को सतनाममय बनाने की दिशा में प्रत्येक सोमवार को सामूहिक गुरू वंदना गुरू आरती व चिंतन मनन के माध्यम से इस दिशा में प्रयास किया गया। जिसका परिणाम आज किसी से छिपा नहीं है। 18 फरवरी 2008 से सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई से संचालित टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम का भी विशेष आकर्षण बनता जा रहा है।

इसी कड़ी में " विचार मंथन कार्यक्रम " का प्रारंभ (LAUNCHING OF VICHAR MANTHAN PROGRAMME) समाज को विभिन्न विषयों पर विचार मंथन कर उचित दिशा प्रदान करने में कारगार सिद्ध अवश्य होगा. ऐसी पूरी आशा एवं विश्वास है। उक्त अवसर पर गुरूओं की वाणी को अपने जीवन में व्यवहारिक रूप देने हेतु अनेकों कारगर कदम उठाने का निर्णय लिया गया है। जिसमें गुरू घासीदास जी का पहला एवं अत्यंत महत्वपूर्ण संदेश "अपन घट के ही देव ल मनइबो " विषय से प्रारंभ होने का एक विशेष महत्व है । इस श्रृंखला की शुभारंभ महत्वपूर्ण गुरू वंदना केन्द्र चिंगरी से होने जा रहे हैं । कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम का लाभ उठावें।

धन्यवाद

विनीत

(बी आर बंजारे)

संयोजक

गुरू वंदना परिवार

चिंगरी (अण्डा) जिला दुर्ग

प्रति

श्रीमान / श्रीमती / कु ....

सूचना

दिनॉंक 28 - 10 - 2009

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई "

" टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम "

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME

उद्देश्य :-

प्रत्येक सोमवार शाम 6 : 30 बजे गुरू वंदना के अवसर पर टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम के माध्यम से समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अनुभवी सज्जनों से उनके अलग अलग विभिन्न क्षेत्रों में अनुभव को समाज को अवगत कराना। ताकि समाज को उनकें विशेष अनुभव का लाभ मिल सके।

कार्यक्रम का शुरूआत (टिप्स क्र. 1):-

दिनांक 18 फरवरी 2008 को 211 वें गुरू वंदना के अवसर पर माननीय श्री डी एल रात्रे जी . अवकाश प्राप्त जिला पंजीयक (DISTRICT REGISTRAR) दुर्ग द्वारा टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम का शुरूआत किया गया।

पिछला कार्यक्रम (टिप्स क्र. 89):-

दिनॉक 26 अक्टूबर (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 299 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री विनोद कुमार राय जी एम टेक (कम्प्यूटर) स्टुडेण्ट . एन आई टी रायपुर " कम्प्यूटर का मानव जीवन पर प्रभाव — सतर्कता कहाँ तक ? " विषय पर अपना अनुभव का टिप्स प्रदान किये ।

अगला कार्यक्रम (टिप्स क्र. 90):-

इसी कड़ी में 2 नवम्बर (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 300 वें गुरू वंदना के अवसर पर डॉ प्रकाश रात्रे जी डेंटल विशेषक्ष . प्रकाश डेंटल क्लीनिक उतई " दॉत के दर्द को जानने व समझने की आवश्यकता — क्यों और कैसे ? " विषय पर अपने अनुभव का टिप्स प्रदान करेंगे ।

कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम का लाभ उठावें।

धन्यवाद

विनीत

प्रति

श्री मान/श्री मती

गुरू वंदना परिवार

भिलाई दुर्ग

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉक 28 - 10 - 2009

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई "में 299 वें गुरू वंदना के अवसर पर

" टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " संपन्न

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे गुरू वंदना के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " जारी है । इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपने अपने कार्य क्षेत्र का संक्षिप्त जानकारियां क्रम बद्ध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं।

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में दिनॉक 26 अक्टूबर (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 299 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री विनोद कुमार राय जी एम टेक (कम्प्यूटर) स्टुडेण्ट . एन आई टी रायपुर " कम्प्यूटर का मानव जीवन पर प्रभाव — सतर्कता कहॉ तक ? " विषय पर अपना अनुभव का टिप्स प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि मानव विकाश की प्रारंभिक अवस्था की सबसे बड़ा अविष्कार पहिये की खोज रहा है । ठीक उसी प्रकार 20 वीं सदी का सबसे महत्वपूर्ण अविष्कार कम्प्यूटर को कह सकते हैं । कम्प्यूटर ने दुनियॉं में भौगोलिक . सांस्कृतिक और आर्थिक दूरियों को मिटाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है । कम्प्यूटर तकनीकि एक राष्ट्रीय व्यवस्था के भीतर समुदायों को इकट्‌ठा करने में मददगार की भूमिका निभा रही है । जब हम आम आदमी के लिये कम्प्यूटर या हर किसी के लिये ब्रॉडबैंड जैसे स्लोगन सुनते हैं या पढ़ते हैं तो पता चलता है कि कम्प्यूटर का जमाना आ गया है ।

भारत में कम्प्यूटर और आधुनिक संचार की शुरूवात सन्‌ 1986 में माना जा सकता है । तत्कालिन शासन प्रशासन व्यवस्था में टेक्नोक्रेट्स और मैनेजरों से अवगत होने का अवसर प्राप्त हुआ तथा संचार क्रांति की लहर चल सी पड़ी । आज के इस मशीन युग में हम सबेरे उठने से लेकर रात को सोने तक कम्प्यूटर का उपयोग विभिन्न रूपों में करते हैं ।बिजली का बिल भरना . टेलीफोन का बिल भरना. ए टी एम से पैसा निकालना आदि सभी कार्य कम्प्यूटर के माध्यम से होने से समय का बचत हो रहा है । आज घर बैठे रेलवे टिकट . एयर टिकट कम्प्यूटर के माध्यम से होने से लंबी कतार व बिचौलियों से बचा जा सकता है । परिजनों. संबंधियों के अलावा अन्य किसी वांछित लोगों व जगहों पर पत्राचार ई मेल के द्वारा कुछ ही सेकेण्ड में दुनियॉं के किसी भी कोने में भेजा जा सकता है । इंटरनेट बैंकिंग की माध्यम से पूरे विश्व में कहीं भी सिर्फ एक क्लीक से पैसा पहुॅंच सकता है । आज हम अपने दूरस्थ वांछित जनों से एक दूसरे को देखते हुये वीडियो कांफ्रेसिंग से अपनी बात आसानी से कर सकते हैं । मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को कम्प्यूटर ने प्रभावित किया है । शिक्षा के क्षेत्र में ः प्राथमिक शिक्षा में उपयोगी बहुत से साफ्टवेयर आते हैं . जो शिक्षा को रोचक तथा मनोरंजक बना देता है .जिससे बच्चे आसानी से समझ सकते हैं ।आज के प्रतियोगी वातावरण में उच्च शिक्षा का महत्व बढ़ गया है । किसी एक विषय की जानकारी एक ही पुस्तक में मिल पाना संभव नहीं है । परन्तु कम्प्यूटर के माध्यम से ई बुक . वेब पेज और अनेक प्रकार के टेक्नीक

का उपयोग कर वांछित जानकारियॉं आसानी से मिल जाता है । परीक्षा परिणाम भी तुरंत देखा जा सकता है । कृषि व मौसम के क्षेत्र में ः पारंपरिक कृषि के अलावा आधुनिक पद्धति को जाने में मदद मिलती है । फसल का उपयुक्त मौसम के अलावा बीजों को हाईब्रीड करने के लिये जीनों की जानकारी भी कम्प्यूटर से संभव है । मौसम की भविष्य वाणी से हर प्रकार की सतर्कता लिया जा सकता है । रोजगार के क्षेत्र में ः आई टी क्षेत्र , न्यूज सेंटर में कम्प्यूटर आपरेटर , मल्टी मिडिया डेवलोपर के अलावा विभिन्न प्रकार के रोजगार की आसानी से जानकारियॉं मिल जाती है । व्यवसाय के क्षेत्र में ः कम्प्यूटीकरण ने भारतीय बैंकों को नई क्षमता से लैस कर दिया है । जिससे बैंकों की लागत कम होने के साथ ही साथ व्यवसाय की रफ्तार कई गुनी बढ़ती जा रही है । शेयर ट्रेडिंग , मनी ट्रांसफर , ऑन लाइन ट्रेडिंग, केड की उपयोगिता इत्यादि तीव्र गति से चालू हो गया है ।कम्प्यूटर हमारे देश के मजबूत अर्थब्यवस्था का एक स्तंभ है । आई टी क्षेत्र के आने से हमारे देश की विकाश दर दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है । सूचना व संचार के क्षेत्र में ः संचार का माध्यम तीव्र व कम खर्चीला हो गया है । मोबाइल, दूरभाष , ई मेल , वीडियो कान्फ्रेसिंग , चेटिंग इत्यादि । वैज्ञानिक क्षेत्र में ः कम्प्यूटर की माध्यम से अंतरिक्ष में उपग्रह भेजना आसान है । दूरियों का आकलन आसानी से हो सकता है । प्रक्षेपास्त्रों का संचालन कम्प्यूटर से किया जाता है । चंद्रयान 1 इसी का उदाहरण हे । मनोरंजन के क्षेत्र में ः स्पेसल इफेक्ट से फिल्मों को और भी रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जा रहा है । एडिटींग, मिक्सिंग के अलावा अब तो पूराने समय के क्लासीकल ब्लैक एण्ड व्हाइट फिल्मों को कम्प्यूटर के माध्यम से रंगिन बनाकर प्रस्तुत किया जा रहा है । मुगल ए आजम , नया दौर इसका उदाहरण है । डिफेंस के क्षेत्र में ः सुरक्षा के क्षेत्रमें कम्प्यूटर का उपयोग जरूरत व चाहत के हिसाब से किया जा रहा है ।चिकित्सा के क्षेत्र में ः टेली मेडिसिन के द्वारा दूरस्थ बैठे डॉक्टर से कंसल्ट कर उनकी सेवाये प्राप्त किया जाना संभव है ।वर्तमान में कम्प्यूटर लगभग सभी की जरूरत व चाहत नजर आने लगी है । विभिन्न वांछित भाषाओं में कम्प्यूटर उपलब्धता से इसकी चाहत और भी बढ़ती जा रही है । इन समस्त सुविधाओं के बावजूद कम्प्यूटर का सुरक्षित उपयोग का होना बहुत ही जरूरी है अन्यथा विपरीत असर होने का खतरा हमेशा बना होता है । जोश के साथ होंश का होना नितांत जरूरी है ।आज विकृत मानसिकता वालों की भी कमी नहीं है जो इसकी दुरूपयोग को बढ़ाने की दिशा में लगे हुये हैं । इस क्षेत्र में जानकार लोगों का कर्तव्य बन जाता है कि वे कम्प्यूटर के दुरूपयोग को रोकने की चुनौति को स्वीकार करें । इस अवसर पर श्री विनोद कुमार राय जी का स्वागत कु. हेमलता कुर्रे जी ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्री एच एल घिदोड़े जी एवं श्री रमन लाल महिलांग के परिवार की ओर से था ।

इसी कड़ी में 2 नवम्बर (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 300 वें गुरू वंदना के अवसर पर डॉ प्रकाश रात्रे जी डेंटल विशेषक्ष . प्रकाश डेंटल क्लीनिक उतई " दॉंत के दर्द को जानने व समझने की आवश्यकता — क्यों और कैसे ? " विषय पर अपने अनुभव का टिप्स प्रदान करेंगे । कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम का लाभ उठावें।

(एफ आर जनार्दन)
संयोजक
गुरू वंदना परिवार. भिलाई दुर्ग

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिंदी /अंग्रेजी दैनिक

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉंक 23 - 10 - 2009

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई "में 298 वें गुरू वंदना के अवसर पर " टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " संपन्न

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे गुरू वंदना के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " जारी है । इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपने अपने कार्य क्षेत्र का संक्षिप्त जानकारियां क्रम बद्ध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं।

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में दिनॉंक 19 अक्टूबर (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6 .30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 298 वें गुरू वंदना के अवसर पर कु. ममता घिदोड़े जी . मेडिकल स्टूडेण्ट मेडिकल कालेज रायपुर " मेडिकल की महत्ता। " विषय पर अपना अनुभव का टिप्स प्रदान की ।उन्होंने बताया कि सृष्टि में अनेकों प्रकार की जीव जन्तु . पशु पक्षी व प्राणी विद्यमान हैं । इसमें मनुष्य भी एक सामाजिक प्राणी है । इन सभी को अपनी अस्तित्व की रक्षा के प्रति सजग रहना होता है । मनुष्य एक विवेकशील व चिंतनशील प्राणी होने के वजह से कुछ ज्यादा ही अपनी अस्तित्व के रक्षा के बारे में सोचता है और ज्यादा संवेदनशील होता है । विभिन्न युगों के साथ ही मानव विकाश की प्रक्रिया चलती आ रही है । जीवन मरण एक कटु सत्य होने के बावजूद भी मानव विकाश अमरत्व की प्रयास की ओर अग्रेसित होती नजर आती है । ज्यादा से ज्यादा अवधि तक जीने की लालसा ही अमरत्व की चाहत की ओर इंगित करता है । " आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है ः " अनेकों प्रकार के शोध कार्य इसी की ही

देन है । मेडिकल साइंस का उद्भव भी अस्तित्व की रक्षा की प्रयास की दिशा में ही हुआ है ।अनेकों प्रकार के बीमारियों का कारण व निवारण जानने का सिलसिला आज भी जारी है । हमेशा से ही मेडिकल प्रत्येक के जिंदगी से जुड़ा रहा है । बारीकी से अध्ययन से पता चलता है कि मेडिकल का संबंध न सिर्फ बीमारी के कारण व निवारण तक ही सीमित नहीं है बल्कि जन्म के पहले और मरण के बाद भी मेडिकल का साथ बना होता है । मेडिकल इतनी महत्वपूर्ण जीवन से संबंधित विधा है . जिसकी जानकारियॉं प्रत्येक आम जनों को गंभीरता से जानने व समझने की आवश्यकता है ।जन मानस में इसका संदेश पहुॅंचता नजर आने लगी है । इसीलिये तो वर्तमान में मेडिकल लाइन में पढ़ने की चाहत अन्य लाइनों की अपेक्षा ज्यादा आती है ।इस बात को हर चिंतनशील व संवेदन शील व्यक्ति आसानी से समझ सकता है । शासन प्रशासन के साथ ही सामाजिक संगठनाओं का विशेष उत्तरदायित्व बनता है कि प्रत्येक के जिंदगी के अस्तित्व से जुड़े मेडिकल की जागरूकता का लहर फैलाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करें । मेडिकल लाइन से जुड़े समस्त जनों का तो और ही विशेष उत्तरदायित्व बन जाता है कि वे अपनी आदत व्यवहार से मेडिकल व मेडिकल से जुड़े जनों के प्रति आकर्षण व मान सम्मान का वातावरण प्रदान करने में अपना अमूल्य सहयोग देकर मानवता को आगे बढ़ावें । मेडिकल लाइन में सफलता हासील प्राप्त करना वर्तमान समय में एक बड़ी ही गर्व की बात है ।इस लक्ष्य को प्राप्त करने करने के लिये खुद के साथ ही सबंधित जनों का सहयोग का होना आवश्यक है । लगन व क्रमबद्धता का होना जरूरी है । उपलब्ध साधनों का सदुपयोग . अवसर की मदद के साथ ही अपनी कमजोरियों को भी दुरूस्त कर चुनौतियों को समझें । लक्ष्य की जरूर प्राप्ति होगी । इस अवसर पर कु ममता घिदोड़े जी का स्वागत कु. रश्मि बौरहा जी ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्री परस राम लहरे जी एवं कु. सुनीता सांडिल्य जी के परिवार की ओर से था ।

इसी कड़ी में 26 अक्टूबर (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 299 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री विनोद कुमार राय जी एम टेक (कम्प्यूटर) स्टुडेण्ट . एन आई टी रायपुर " कम्प्यूटर का मानव जीवन पर प्रभाव — सतर्कता कहॉं तक ? " आयोजित है। कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्य क्रम का लाभ उठावें।

(एफ आर जनार्दन)
संयोजक
गुरू वंदना परिवार. भिलाई दुर्ग

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिंदी /अंग्रेजी दैनिक

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉंक 20 - 10 - 2009

औद्योगिक नगरी कोरबा में गुरू वंदना का बढ़ता चरण

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन ट्रांसपोर्टनगर कोरबा " में गुरू वंदना का प्रथम वर्षगांठ संपन्न

विगत पांच छः वर्षो से इस्पात नगरी भिलाई को केन्द्र बिन्दु स्थापित कर सामूहिक गुरू वंदना , गुरू आरती व चिंतन मनन की प्रक्रिया संपूर्ण छत्तीसगढ़ में सुचारू रूप से जारी है ।छत्तीसगढ़ में भिलाई व कोरबा ऐसे दो प्रमुख केन्द्र हैं , जो छत्तीसगढ़ के समस्त गतिविधियों को प्रभावित करता है , इसमें कोई दो मत नहीं हो सकता ।कोरबा औद्योगिक नगरी के साथ ही कोयला सेक्टर का भी प्रमुख केन्द्र है ।विगत 12 अक्टूबर 2009 को गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन ट्रांसपोर्टनगर कोरबा " में गुरू वंदना का प्रथम वर्षगांठ संपन्न होना भविष्य की छत्तीसगढ़ की स्वरूप की ओर इंगित करता है । गुरू वंदना का प्रथम वर्षगांठ समारोह समिति के प्रमुख अतिथि श्री एफ आर जनार्दन संयोजक गुरू वंदना परिवार भिलाई नगर एवं सहायक महाप्रबंधक भिलाई इस्पात संयंत्र थे । विशेष अतिथियों में गुरू वंदना परिवार भिलाई के श्री टी आर टंडन जी , श्री एस एल मात्रे जी औद्योगिक न्यायाधीस जगदलपुर , श्री एल एल कोशले जी उप मुख्य अभियंता एस ई सी एल कोरबा , श्री एस पी बारले जी समाज कल्याण अधिकारी सी बी एस सी कोरबा , श्री एस आर टंडन अधीक्षण यंत्री एन टी पी सी कोरबा व श्री टी आर मिरे पूर्व अध्यक्ष सतनामी कल्याण समिति कोरबा थे ।सर्व प्रथम अतिथियों द्वारा गुरू गद्दी में दीप प्रज्वलित किया गया । श्री एफ आर जनार्दन जी की अगुवाई में सामूहिक गुरू वंदना, गुरू आरती , चिंतन मनन की प्रक्रिया संपन्न हुआ । श्री टी आर मिरे जी ने समिति के गति विधियों के बारे में विस्तृत जानकारियॉं प्रदान किये । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री एफ आर जनार्दन जी ने "वर्तमान परिवेश में गुरू वंदना की सार्थकता "पर प्रकाश डाला । उन्होंने बताया कि सत् और असत् में द्वन्द्व सदियों से चलते आ रहा है । प्रेम व भाईचारे पर आधारित सत् के संदेश को अनेकों मानवतावादी महापुरूषों ने इस धरती पर जन जन तक प्रचारित व प्रसारित करने का प्रयास किये हैं । इसी कड़ी में अठारहवीं सदी में छत्तीसगढ़ में महान संत गुरू घासीदास जी ने तत्कालिन समाज की जरूरत व चाहत को ध्यान में रखकर उपलब्ध साधनों के आधार पर प्रेम व भाईचारा पर आधारित सतनाम संदेश को जन जन तक पहुँचाने का भरसक प्रयास किये । आज छत्तीसगढ़ की ब्याप्त मानवीय संस्कृति उन्हीं की ही देन है । गुरू घासीदास जी के बाद उनके सुपुत्र गुरू बालकदास जी ने बड़ी ही योजना बद्ध तरीके से सतनाम संदेश के लहर को तेजी से फैलाने का प्रयास किये । कुछ अमानवीय तत्वों को सतनाम की बात अच्छी नहीं लगी ओर 28 मार्च सन् 1860 को औराबांधा "मुगेली के पास "षडयंत्र पूर्वक गुरू बालकदास जी का निर्मम हत्या कर दिया गया । सतनाम की लहर मानों थम सा गया । स्व नकुलदेव ढीढ़ी जी ने सर्व प्रथम 18 दिसम्बर सन् 1938 में अपने ग्राम भेरिंग "महासमुंद" से गुरू घासीदास जी की जयंती का शुरूवात कर किये ।जिससे थमा हुआ सतनाम का लहर पुनः नियमित रूप से प्रारंभ हो गया । साथ ही सन् 1961 से तीन दिवसीय गिरौदपुरी का मेला का नियमित

आयोजन से प्रचार प्रसार में तेजी आयी हे । जिसका प्रभाव आम जनता के साथ शासन प्रशासन को भी है । वर्तमान में छत्तीसगढ़ में स्थित हजारों सतनाम भवन , सतनाम धाम का समुचित उपयोग कर, केन्द्र बिन्दुओं का स्थापना करते हुये सतनाम की विचारधारा को जन जन तक पहुँचाना अत्यंत ही आसान जान पड़ता है । इसके लिये सुशिक्षित व कर्मठ कार्यकर्ता का होना अति आवश्यक है ।भिलाई केन्द्र इस दिशा में प्रयासशील है । भिलाई व कोरबा दोनों यदि कदम से कदम मिला पायें तो यह कार्य अत्यंत आसान हो जायेगा । गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन ट्रांसपोर्टनगर कोरबा "में गुरू वंदना का प्रथम वर्षगांठ का सफलता पूर्वक संपन्न होने से सकारात्मक लक्षण दृष्टिगोत होता है ।हम आगे भी प्रयास जारी रखें ।अन्य अतिथियों ने भी अपने अपने विचार ब्यक्त कर गुरू वंदना प्रक्रिया की सराहना किये और भविष्य में सहयोग करने का आव्हान भी किये ।

इस अवसर पर श्री एफ आर जनार्दन जी स्वागत श्री राम चंद पाटले जी अध्यक्ष सतनामी कल्याण समिति कोरबा ने श्री फल व पुष्प प्रदान कर किये ।श्री टी आर टंडन भिलाई व श्री तुका राम निराला जी दंपती का भी विशेष योगदान के लिये सम्मानित किया गया । इस कार्यक्रम को सफल बनाने में समिति के समस्त पदाधिकारियों का पूर्ण योगदान रहा । अन्य गुरू वंदना केन्दों के अलावा विभिन्न शहरी व ग्रामीण अंचलों से भारी संख्या में लोग उपस्थित थे ।जिसमें प्रुमख रूप से ,बालको से ः श्री जे पी पात्रे जी , श्री आर आर केशकर जी , श्री एम डी बंजरा जी, श्री डी आर कुर्रे जी, श्री सी आर धिरही जी आदि । गेवरा से ः श्री गोकुल प्रसाद भारती जी , श्री नरसिंह खूंटे जी, श्री भरत लाल खूंटे जी , श्री भूवन लाल गहिरवारे जी , श्री जे डी गिलहरे जी, श्री राम कुमार बर्मन जी , श्री संतोष निराला जी, श्रीमती रामबाई जी ,श्री विश्राम कुर्रे जी आदि । कुसुमुंडा से ः श्री मंशा राम कठोतिया जी व श्री डी सी मिलन जी अपने साथियों सहित ।एन टी पी सी से ः श्री टी आर बंजारे जी,श्री गेंडले इंजिनियर जी , श्री आर एल सायतोड़े जी,श्री एस आर टंडन जी,एस आर मिरी जी आदि । सी एस ई बी से ः श्री डहरियाजी,श्री बर्मन जी , श्री सरयू प्रसाद बारल जी एवं श्री हितेन्द्र मारकण्डे जी अपने इंजिनियर साथियों सहित ।मानिकपुर से ः श्री नारायण कुर्रे जी अपने साथियों सहित ।एस ई सी एल कोरबा से ः श्री तीज राम टंडन जी अपने साथियों सहित उपस्थित थे । रात्रि में गुरू भंडारा का भी आयोजन किया गया था ।

(एफ आर जनार्दन)
संयोजक
गुरू वंदना परिवार,भिलाई दुर्ग

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिंदी /अंग्रेजी दैनिक
....

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉंक **9 - 10 - 2009**

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई "में **296** वें गुरू वंदना के अवसर पर

" टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " संपन्न

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे गुरू वंदना के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " जारी है । इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपने अपने कार्य क्षेत्र का संक्षिप्त जानकारियां क्रम बद्ध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं।

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में दिनॉक 5 अक्टूबर (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6 .30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 296 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्रीमती उषा कुर्रे जी ब्याख्याता उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कौड़ीकसा, मोहला मानपुर राजनांदगांव "महिला शक्ति की सार्थकता ।" विषय पर अपना अनुभव का टिप्स प्रदान की । उन्होंने बताया कि प्रकृति में उपलब्ध विभिन्न सजीव जीव जन्तु व प्राणी तथा विभिन्न निर्जीव पदार्थो से सभी परिचित हैं , जो पुर्लिंग अथवा स्त्रीलिंग से संबोधित होते हैं । सृष्टि के सृजन एवं संचालन में दोनों ही लिंग का संतुलन होना अति आवश्यक है । प्रकृति में अनावश्यक छेड़छाड़ से असंतुलन पैदा होने का खतरा बना होता है । मानव प्रकृति का अदभूत कृति है ।चिंतन मनन करने की प्रक्रिया सिर्फ मानव में ही होती है । देश काल व परिस्थिति के आधार पर पुरूष प्रधान अथवा स्त्री प्रधान परिवार , समाज ,देश अथवा विश्व का चित्रण सभव है । पुरूष व महिला दोनों में ही शक्ति निहित होती है । जनम जीवन व मरण जिंदगी के कटु सत्य हैं । गर्भ में शिशु के आगमन से ही लड़की अथवा लड़का की चाहत मॉ बाप व परिवार वालों के सोच में आ ही जाती है और जिसका प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शन हो जाता है ।लिंग भेद को प्रोत्साहित अथवा निरूत्साहित करने में प्रमुख भूमिका पविार, समाज , देश व विश्व में प्रचलित संस्कार की होती है । भारतीय संविधान लिंग भेद को सैद्धांतिक रूप से स्पष्ट रूप से नकारता है लेकिन व्यवहार में इसको नकारा नहीं जा सकता । हां इतना जरूर है कि आम जनों में शिक्षा का प्रचार प्रसार कर जागरूकता लाना संभव है । महिला शक्ति की सार्थ कता को महिला के विभिन्न रूपों में निहित अधिकार व कर्तव्य में सामंजस्य अथवा संतुलन होने से ही मानव कल्याण की दिशा में कदम हो सकती है ।जीवन के शुरूवात में जन्म से किशोर अवस्था, शिक्षा दीक्षा के उपरांत शादी होने से महिला का अनेक रूप बेटी , बहू , पत्नी , मॉ, सास के अलावा विभिन्न रिस्ते के हिसाब से महिला का रूप समाज के सामने होता है । दूसरों की तरफ उंगली उठाना एक आम बात है ।उंगली दिखाने की प्रक्रिया में एक उगली जरूर दूसरे की तरफ होती है लेकिन तीन उंगलियां तो खूद की तरफ होती है, जिसका अर्थ हमें समझ आ जाय तो हम दूसरों की तरफ उंगली दिखाना ही बंद कर देगें ।महिला का मॉ के रूप में परिवार व समाज के साथ विशेष योगदान हो सकता है । यह कटु सत्य है कि अगर एक महिला दूसरे महिला वर्ग को उचित सम्मान देना सीख जाय तो वर्तमान में ब्याप्त बहुत सारी सामाजिक बुराइयां अपने आप दूर हो जायेगी । इसके लिये महिलाओं में आपसी संपर्क एवं सहयोग की जरूरत है ।सुखद पहलु है कि इस दिशा में विभिन्न स्तर

पर प्रयास जारी है । पुरूष प्रधान व अबला नारी की वर्षो पुरानी धारणा अब बदलने लगी है । जिंदगी के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की प्रभावशाली भागीदारी होने लगी है । कुछ क्षेत्रों में तो महिलायें पुरूषों से भी आगे निकलते नजर आने लगी हैं जो उनकी गुणात्मक नेतृत्व की पहिचान है । अगर विश्लेषण किया जाय तो पता चलता है कि संस्कार के सृजन व संचालन में महिलाओं की सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका होती है ।अतएव महिलाओं में जागरूकता से ही जागरूक परिवार जागरूक समाज व जागरूक देश का निर्माण संभव है ।इस दिशा में परिवार के सहयोग का होना नितांत आवश्यक है ।श्रीमती उषा कुर्रे जी का स्वागत श्रीमती घसनीन बाई बंजारे जी ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्री हेमंत सिंह जी के परिवार की ओर से था ।

इसी कड़ी में **12** अक्टूबर (दिन सोमवार) **2009** को शाम **6.30** बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **297** वें गुरू वंदना के अवसर श्री सांवत राम बंजारे जी सेवा निवृत वरिष्ठ निरीक्षक भिलाई इस्पात संयंत्र " समय पालन आवश्यक क्यों और कैसे **?** " विषय पर अपना अनुभव का टिप्स प्रदान करेंगे । कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्य क्रम का लाभ उठावें।

(एफ आर जनार्दन)
संयोजक
गुरू वंदना परिवार भिलाई दुर्ग

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिंदी /अंग्रेजी दैनिक
....

प्रेस विज्ञप्ति

दिनॉक **10 - 09 - 2009**

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई "में **292** वें गुरू वंदना के अवसर पर

" टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " संपन्न

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे गुरू वंदना के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " जारी है । इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपने अपने कार्य क्षेत्र का संक्षिप्त जानकारियां क्रम बद्ध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं।

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में दिनॉक 07 सितम्बर (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 292 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री सांवला राम डाहरे जी सहायक वाणिज्यीकि कर अधिकारी दुर्ग एवं संपादक सत्य दीप पत्रिका "राजनीति और समाज ।" विषय पर अपना अनुभव की जानकारियॉं प्रदान किये । उन्होंने बताया कि विश्व के संपूर्ण मानव समाज ही , समाज के वास्तविक सिद्धांतिक परिभाषा के परिधि में आता है । लेकिन हम व्यवहारिकता को भी नजर अंदाज नहीं कर सकते । वर्तमान व्यवहार में समाज की परिभाषा का आधार क्षेत्र , जाति , धर्म , विभिन्न वर्ग आदि बन चुका है । गहराई से विश्लेषण करने पर वर्तमान में समाज के तीन स्वरूप नजर आते हैं । पहला विकसित समाज , दूसरा विकासशील समाज व तीसरा अविकसित समाज । इन समाजों के स्वरूपों का प्रमुख आधार शिक्षा है । हमारे भारत देश में सर्व शिक्षा का अभियान सन् 1825 में शुरूवात हुआ , जो देश आजाद होने के बाद जब 25 जनवरी सन् 1950 में संविधान बनने से सर्व शिक्षा अभियान के प्रचार प्रसार में बड़ी तेजी आया । सर्व शिक्षा अभियान के शुरूवात होने के पहले शिक्षा संचित विकसित समाज व शिक्षा वंचित अविकसित समाज ही नजर आते थे । सर्व शिक्षा अभियान के फलस्वरूप ही विकासशील समाज का प्रादुर्भाव संभव हो पाया । व्यक्तियों के समूह में व्यवस्थित रूप से रीति रीवाज का पालन आचार संहिता के साथ संचालित करना ही राजनीति होती है । राजनीति का प्रभाव प्रत्येक के जिंदगी के समस्त पहलुओं से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमेशा जुड़ा होता है । राजनीति ही एक ऐसी शक्ति या चाबी होता है, जिससे मुसीबत के हर ताले खुल जाते हैं । (Political Powr is such a Master Key by which you can open each & every lock .) इसीलिये राजनीतिक शक्ति को मास्टर चाबी भी कहा जाता है । लेकिन विभिन्न कारणों से वर्तमान में राजनीति का स्वरूप बदलकर मुसीबत पैदा करने का औजार नजर आता है । विकसित समाज का पहिचान है कि वह अपने पीछे राजनीति को चलाता है, न कि राजनीति के पीछे चलता है । इसके ठीक विपरित विकासशील समाज को राजनीति के पीछे चलना तो बड़ी आसानी होती है, लेकिन राजनीति को अपने पीछे चलाने में काफी कठिनाई महसूस करता है । अविकसित समाज को तो कोई समझ ही नहीं आ पाता ।समस्त दलगत राजनीति की पैनी नजर विकासशील समाज पर ही केन्द्रित होता है , जो उस समाज की बाहुलता के कारण होता है ।ऐसी परिस्थिति में विकासशील समाज को मार्गदर्शन व दिशा निर्देश की अत्यंत आवश्यकता है । इसके लिये संबंधित समाज के शिक्षित व जानकार जनों की भूमिका अहम जान पड़ता है । इस दिशा में प्रयास विभिन्न स्तरों पर जारी जरूर

है लेकिन ताकतवर लहर(Forceful Current) की अभी भी नितांत जरूरत है । विचारों व स्थलों के केन्द्र बिन्दु बनाकर एकरूपता के साथ गुणवत्तायुक्त नेतृत्व में प्रयास करने पर अवश्य ही लक्ष्य की प्राप्ति संभव है । विकासशील समाज को विकसित समाज बनने के लिये सतर्कतापूर्वक सीमित राजनीति सहयोग की भी आवश्यकता होती है . जो जरूरत व चाहत के अनुसार हो सकता है । राजनीति से सिर्फ औपचारिक नियंत्रण होता है जबकि समाज से अनौपचारिक किन्तु प्रभावशाली नियंत्रण होता है । जो दर्शाता है कि समाज का स्थान राजनीति से ऊपर होता है । गॉवों से शहर की तरफ लोगों का स्थानांतरण (Migration) सुखद(Prospective) व दुखद(Distress) दोनों ही प्रकार से हुयी है । अधिकतर पढ़े लिखे कर्मचारी गांव से शहर में सुखद स्थानांतरण(Prospective Migration) कर गांव में पुनः वापस जाना पसंद नहीं करता ।परिणाम स्वरूप गांवों की दुर्दशा बढ़ती जा रही है और दलगत राजनीति के शिकार होते जा रहे हैं । ऐसी परिस्थिति में पढ़ा लिखा वर्ग का कर्तब्य बन जाता है कि वे गांव व शहर के बीच फैलती खाड़ी को पाटने का प्रयास करें । विकशित समाज से ही विकसित राष्ट्र व विश्व की परिकल्पना की जा सकती है ।यह सब क्षेत्र. जाति. धर्म. वर्ग आदि की संकीर्ण विचारधारा से ऊपर उठकर. विकसित मानव समाज बनाकर ही संभव हो सकता है । श्री सांवला राम डाहरे जी का स्वागत श्री वेद राम जांगड़े जी वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्री हेमंत सिंह कुर्रे जी के परिवार की ओर से था

इसी कड़ी में 14 सितम्बर (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 293 वें गुरू वंदना के अवसर पर अगला " टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " का आयोजन किया गया है । कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम का लाभ उठावें।

(एफ आर जनार्दन)
संयोजक
गुरू वंदना परिवार.भिलाई दुर्ग

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिंदी /अंग्रेजी दैनिक

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉक 01 - 09 - 2009

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई "में 291 वें गुरू वंदना के अवसर पर " टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " संपन्न

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे गुरू वंदना के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " जारी है । इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपने अपने कार्य क्षेत्र का संक्षिप्त जानकारियां क्रम बद्ध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं।

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में दिनॉक 31 अगस्त (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6 .30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 291 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्रीमती शोभा खिलारी जी उच्च श्रेणी शिक्षिका उच्चतर माध्यमिक शाला धौराभांठा (पाटन) " सत्ता की महत्ता। " विषय पर अपना अनुभव की। उन्होंने बताया कि मानव जीवन के साथ सत्ता का अटूट संबंध है ।मुख्य रूप से दो प्रकार की सत्ता का एहसास हम करते हैं । विश्व की सृजन व संचालन महानतम सत्ता पहली प्रकार की सत्ता है जिसे प्राकृतिक सत्ता कहा जा सकता है । इसका असर प्रत्येक जीव जन्तु व प्राणी से लेकर निर्जीव पदार्थो सभी पर नियंत्रित होता है । प्रत्येक के जनम जीवन व मरण में इसी सत्ता का ही कमाल होता है । दूसरी प्रकार की सत्ता जो मानव निर्मित है , जिससे जीवन के वाह्य जीवन संचालित व नियंत्रित होता है । इसमें राजनीतिक , प्रशासनिक , आर्थिक , जमींदारी व सांस्कृतिक सत्ता प्रमुख हैं । प्रत्येक सत्ता एक दूसरे को नियंत्रित व प्रभावित करते हैं । सत्ता का मूल आधार संगठन होता है । संगठन के आधार पर ही सत्ता का वजन घटता या बढ़ता नजर आता है । संगठन व्यक्तियों के समूह होता है, जो किसी खास विचार धारा या भावना से जुड़ा होता है । इस तरह कहा जा सकता है कि विचार धारा ही संगठन के साथ साथ प्रत्येक मानव निर्मित सत्ता को प्रभावित करता है । विचार धारा मानवीय अथवा अमानवीय कोई भी हो सकता है । यह विचार धारा के सृजन व संचालित करने वाली नेतृत्व के नीयत व नीति पर निर्भर करता है । मानवीय विचार धारा से समता , स्वतंत्रता, बंधुत्व व न्याय की भावना ही जिंदगी के प्रत्येक क्षेत्र में परिलक्षित होगा । इस विचार धारा को अनेक मानवीय संतों व महात्माओं ने प्रचारित व प्रसारित किये । समस्या के निवारण में सत्ता का बड़ा ही योगदान होता है । विभिन्न सत्ता के उपयोग के आधार पर अल्प अवधीय समस्या का निवारण , जो सामाजिक स्तर पर किया जा सकता है । दीर्घ अवधीय समस्या का निवारण जो राजनीतिक सत्ता के उपयोग से संभव है । समस्या के स्थायी निवारण के लिये सांस्कृतिक सत्ता का बड़ा ही योगदान होता है । इसीलिये अनेक मानवतावादी महापुरूषों ने अमानवीय संस्कृति को बदल कर मानवता पर आधारित सस्कृति की लहर चलाने की भरपूर प्रयास किये । छत्तीसगढ़ की धरती में 18 वीं सदी में गुरू घासीदास द्वारा चलाये गये सतनाम की लहर इसका उदाहरण है । मानवीय संस्कृति के महत्व को आम जनों को बताने व उस पर चलाने की आज की महती आवश्यकता है । इसके लिये प्रबुद्ध वर्ग उचित नेतृत्व के साथ अपना तन , मन व धन के सहयोग से संगठन शक्ति को बढ़ाकर विभिन्न

सत्ताओं का सदुपयोग कर सकते हैं । सत्ता के केन्द्रीकरण व विकेन्द्रीकरण के प्रभाव को समझना बड़ा जरूरी है । भारतवर्ष के परिपेक्ष में विवेचन करने से पता चलता है कि सदियों से सत्ता का केन्द्रीकरण पुरूष वर्गो के अधीन ही रहा है । इतना ही नहीं सर्व शिक्षा का अधिकार नहीं होने से कुछ मुट्ठी भर चालाक लोगों तक ही सत्ता का केन्द्रीकरण रहा है । अनेक मानवतावादी महापुरूषों के प्रयास से तथा **26** जनवरी **1950** से भारतीय संविधान के लागू होने से सत्ता के विकेन्द्रीकरण को पर्याप्त बढ़ावा मिला है । सत्ता के विकेन्द्रीकरण समानुपातिक भागीदारी होने से अपनापन की भावना आती है , जो किसी भी समाज , देश के साथ ही साथ विश्व तक को भी प्रगति के कगार में पहुँचाने में मदद करता है । सत्ता के विकेन्द्रीकरण के महत्व को सभी को और खासकर महिलाओं को समझने व समझाने की निहायत जरूरी है । संपर्क व सहयोग के लिये सकारात्मक दृष्टिकोण से सत्ता का केन्द्रीकरण भी आवश्यक है । परिवार में प्रत्येक सदस्य परिवार के मुखिया के नेतृत्व में केन्द्रीकरण प्रक्रिया से ही आपस में जुड़े होते हैं, जो हमें केन्द्रीकरण के महत्व को दर्शाता है ।
श्रीमती शोभा खिलारी जी का स्वागत श्री बालाराम जी वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्रीमती सेजा मारकण्डे जी के परिवार की ओर से था।उक्त अवसर पर श्री गोवर्धन टंडन जी वरिष्ठ सतनाम केडर ने भविष्य में किये जाने वाले कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान किये ।

इसी कड़ी में **7** सितम्बर (दिन सोमवार) **2009** को शाम **6.30** बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **292** वें गुरू वंदना के अवसर पर अगला " टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " का आयोजन किया गया है । कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम का लाभ उठावें।

(एफ आर जनार्दन)
संयोजक
गुरू वंदना परिवार,भिलाई दुर्ग

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिंदी /अंग्रेजी दैनिक
....

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉक **28 - 07 - 2009**

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई "में **286** वें गुरू वंदना के अवसर पर
" टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " संपन्न

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे गुरू वंदना के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " जारी है । इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपने अपने कार्य क्षेत्र का संक्षिप्त जानकारियां क्रम बद्ध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं।

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में दिनॉक 27 जुलाई (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6 .30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 286 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री तुला राम टंडन जी पूर्व कर्मी भिलाई इस्पात संयंत्र एवं वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता " समाज मार्ग दर्शन में बुजुर्गो के योगदान की सार्थकता। " विषय पर अपने अनुभव के टिप्स प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि किसी भी राष्ट्र की सतत प्रगति के लिये देश में प्रत्येक क्षेत्र में संतुलन अथवा स्थिरता का होना अति आवश्यक है । अनेकता में एकता हमारे भारत देश की पहिचान है . जिसे हम अनेकों माध्यम से प्रदर्शित करते रहते हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि व्यवहारिकता में हमारा देश अनेकों जातियॉं . धर्म . वर्ग आदि में बटा हुआ है । देश में संतुलन तभी संभव है जब विभिन्न जातियों व धर्म पर आधारित समाज अपने आप में संतुलित हों . जो हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौति है । इस चुनौति को पूरी तरह समझ कर ही उचित रास्ता निकाला जा सकता है । समाज में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के शक्तियॉं . कमजोरियॉं .उपलब्ध अवसर एवं संभावित चुनौतियों का विश्लेषण कर के ही आगे बढ़ा जा सकता है । देश के आजादी के पहले और आजादी के बाद की परिस्थितियॉं काफी बदली हैं । शिक्षा के विस्तार के साथ ही नौकरी चाकरी में बढ़ोत्तरी हुयी है । इतना ही नहीं लंबे समय तक सेवा देने के बाद सेवा निवृत जनों का अनुभव आज प्रचुर मात्रा में नजर आता है ।हम यूं कहें कि युवाओं के जोश के साथ ही होंश संभाले बुजूर्ग भी समाज में आज उपलब्ध हैं । समाज में संतुलन के लिये जोश के साथ ही होश का होना नितांत जरूरी है । जोश व होश रखने वालों का संपर्क एवं आपसी सहयोग बनाने की मुहिम चलाने की जरूरत है । विभिन्न सामाजिक संगठनायें यह कार्य बड़ी आसानी से कर सकते हैं । इस परिदृश्य में बुजूर्गो . खास कर शिक्षित बुजूर्गो की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है । बजूर्गो के हर प्रकार के अनुभव भावी पीढ़ी के लिये सीख लेने अथवा सबक लेने का आधार बन सकता है । बुजूर्गो के ऐसे कार्य जो फायदे मंद रहा हो . उससे सीख मिल सकती है । ऐसे कार्य जिससे बुजूर्गो ने नुकसान अनुभव किये हों . उससे सबक लेकर नहीं करने का आधार बन सकता है । हम कह सकते हैं कि बुजूर्ग समाज के इतिहास हैं जिससे सीख व सबक लिया जाना आसान है ।उन्होंने समाज के समस्त बजूर्गो का आव्हान किये कि वे समाज से जुड़ कर अपनी जिंदगी के अनुभव को बांट कर जिंदगी से विदा लेने के पहले पारिवारिक जिम्मेदारी के साथ साथ सामाजिक जिम्मेदारी का भी निर्वहन करें ।

उन्होंने अपने जिंदगी के कटु अनुभवों का जिक्र करते हुये अपने भविष्य के शेष जिंदगी में भी समाज के साथ साथ कदम बढ़ाने का आश्वासन भी दिये । इस अवसर पर श्री टंडन जी का स्वागत श्री टी दास जी प्रबंधक विधि विभाग भिलाई इस्पात संयंत्र ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्री एफ आर जनार्दन जी के परिवार की ओर से था। गुरू वंदना परिवार की ओर से श्री एफ आर जनार्दन जी संयोजक गुरू वंदना परिवार के सुपुत्र श्री शिशिर जनार्दन एवं पुत्र वधु श्री मती विभा जनार्दन को प्रथम पुत्र रत्न की प्राप्ति (दिनॉक 21 जुलाई 2009) पर हार्दिक बधाइयॉं दी गई ।

इसी कड़ी में 3 अगस्त (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 287 वें गुरू वंदना के अवसर पर अगला " टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " का आयोजन किया गया है ।इस अवसर पर श्री मती उषा बारले जी सुविख्यात लोक कलाकार " कला की महत्ता । " विषय पर अपना अनुभव प्रदान करेंगी । कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम का लाभ उठावें।

(एफ आर जनार्दन)
संयोजक
गुरू वंदना परिवार भिलाई दुर्ग

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिंदी /अंग्रेजी दैनिक
....

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉक 25 - 07 - 2009

गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई "में 285 वें गुरू वंदना के अवसर पर

" टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " संपन्न

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे गुरू वंदना के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम " टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम " जारी है । इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपनेअपने कार्य क्षेत्र का संक्षिप्त जानकारियां क्रम बद्ध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं।

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में दिनॉक 20 जुलाई (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 285 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री प्रमोद खुंटे जी मानव संसाधन अधिकारी गेमन इंडिया भिलाई इकाई "पारिवारिक परिपेक्ष में मानव संसाधन की सार्थकता । " विषय पर अपने अनुभव के टिप्स प्रदान किये । उन्होंने बताया कि वर्तमान परिवेश में परिवार का ब्यापक अर्थ है जिसका दायरा मॉं बाप व बच्चों से शुरू होकर बढते क्रम में विश्व के सम्पूर्ण मानव परिवार भी सम्मिलित हो जाता है ।इस तरह मानव संसाधन का प्रबंधन एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रक्रिया है ।मानव प्रकृति का एक चिंतनशील प्राणी है । मानव के क्रमिक विकाश निरंतर जारी है । दिन प्रतिदिन नित नये तकनीक मानव दिमाक की ही सोंच है ।उपलब्ध संसाधनों का सकारात्मक दिशा में अधिकतम उपयोग कर के ही विश्व के मानव परिवार में खुशहाली लायी जा सकती है ।यह जानना आवश्यक है कि प्रकृति कभी डुपलीकेट पैदा नहीं करता । प्रकृति में उपलब्ध सभी जीव जन्तु व पदार्थो का अपना विशेष गुण व धर्म होता है । उनके गुण व धर्म को जान कर ही कब और कैसे उपयोग में लाने में आसानी होती है । इन सब में मानव स्वभाव बड़ी ही क्लीष्ट होती है , जिसको जानना व समझना भी बहुत ही आवश्यक है ।परिवार के परिपेक्ष में परिवार के मुखिया के दक्षता पर निर्भर करता है कि परिवार में उपलब्ध सदस्यों के साथ ही अन्य साधनें का सकारात्मक दोहन कब और कैसे करें ।वर्त मान समय में जिंदगी के प्रत्येक क्षेत्र में दूरियॉं कम होती जा रही हैं साथ ही समय प्रबंधन में भी भारी परिवर्तन इलेक्ट्रानिक मिडिया के वजह से आते जा रहा है।जिस परिवार ने जमाने के साथ चलना सीख लिया वह प्रगति के प्रथम पंक्ति में नजर आती है । इसके विपरीत कई परिवार सिर्फ अंधविश्वास व रूढीवाद में फंसे नजर आते हैं जो परिवार के साथ ही समाज , देश व विश्व के समस्त मानव परिवार के प्रगति के लिये घातक है ।प्रगति शील मानव संसाधन की लहर पैदा करने की जरूरत है , जिसके लिये मानवता के अनुरूप आदत व्यवहार में परिवर्तन के लिये हर स्तर पर मुहिम चलाने से ही संभव हो सकता है । इस अवसर पर श्री प्रमोद खुंटे जी का स्वागत श्री मोहन लाल भतरिया जी ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्री रमेश देशलहरा जी के परिवार की ओर से था।

इसी कड़ी में 27 जुलाई (दिन सोमवार) 2009 को शाम 6.30 बजे गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 286 वें गुरू वंदना के अवसर पर अगला " टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " का आयोजन किया गया है । कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम का लाभ उठावें।

(एफ आर जनार्दन)
संयोजक
गुरू वंदना परिवार, भिलाई दुर्ग

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिंदी /अंग्रेजी दैनिक